नये नियम का सर्वेक्षण

भाग 1

नये नियम को कैसे पढ़ना चाहिए?
तीन परिणाम का निरीक्षण

- साहित्यिक परिणाम
- ऐतिहासिक परिणाम
- धर्मवैज्ञानिक परिणाम

नया नियम क्या है?
साहित्य के रूप में नया नियम

- 27 पुस्तकों का एक संग्रह ...
- एक ईश्वरीय लेखक द्वारा लिखा गया तथा लगभग 9 मानवीय लेखकों
- कोअन ग्रीक में, लोगों की सामान्य भाषा...
- 100 वर्षों से कम समय में
- नये नियम के साहित्य की तीन मुख्य शैलियाँ ...
  - ऐतिहासिक वर्णानात्मक
  - पत्री
  - प्रकाशितवाक्य
- नये नियम के साहित्य की तीन विशिष्टता
  - ऐतिहासिक यथार्थता
  - शाब्दिक प्रामाणिकता
  - ईश्वरीय अधिकार

नये नियम की घटनाएँ कहाँ और कब हुई?
इतिहास के रूप में नया नियम

- दोनों नियमों के बीच का समय काल
  - फारसी शासन
  - यूनानी शासन
  - मैक्काबिन काल: 166-63 बी.सी.
  - रोमी काल: 63 बी.सी. – नया नियम
- नये नियम का घटना क्रम...
  - यीशु मसीह का जीवन 4-6 बी.सी. के बीच आरम्भ होता है
  - प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पहली शताब्दि की समाप्ति के निकट लिखी गई
- नये नियम की सामयिकता....
  - धर्मवैज्ञानिक रुप से उचित समय
  - धार्मिक रूप से उचित समय
  - सांस्कृतिक रूप से उचित समय
  - राजनीतिक रुप से उचित समय



ELEVATIONS (in ft.)

Mt. Hermon	9,232
Lake Huleh	223
Sea of Galilee	-695
Nazareth	1,245
Mt. Tabor	1,929
Jerusalem	2,693
Dead Sea	-1,285

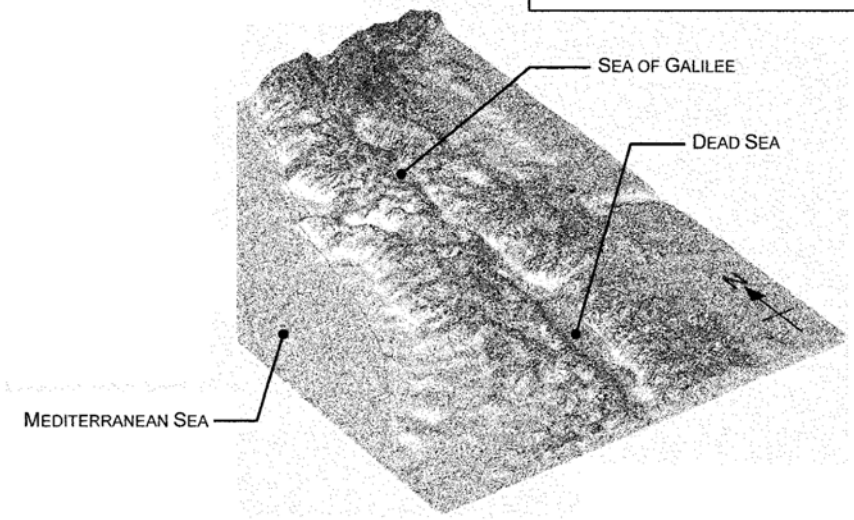
AREA (approx.)

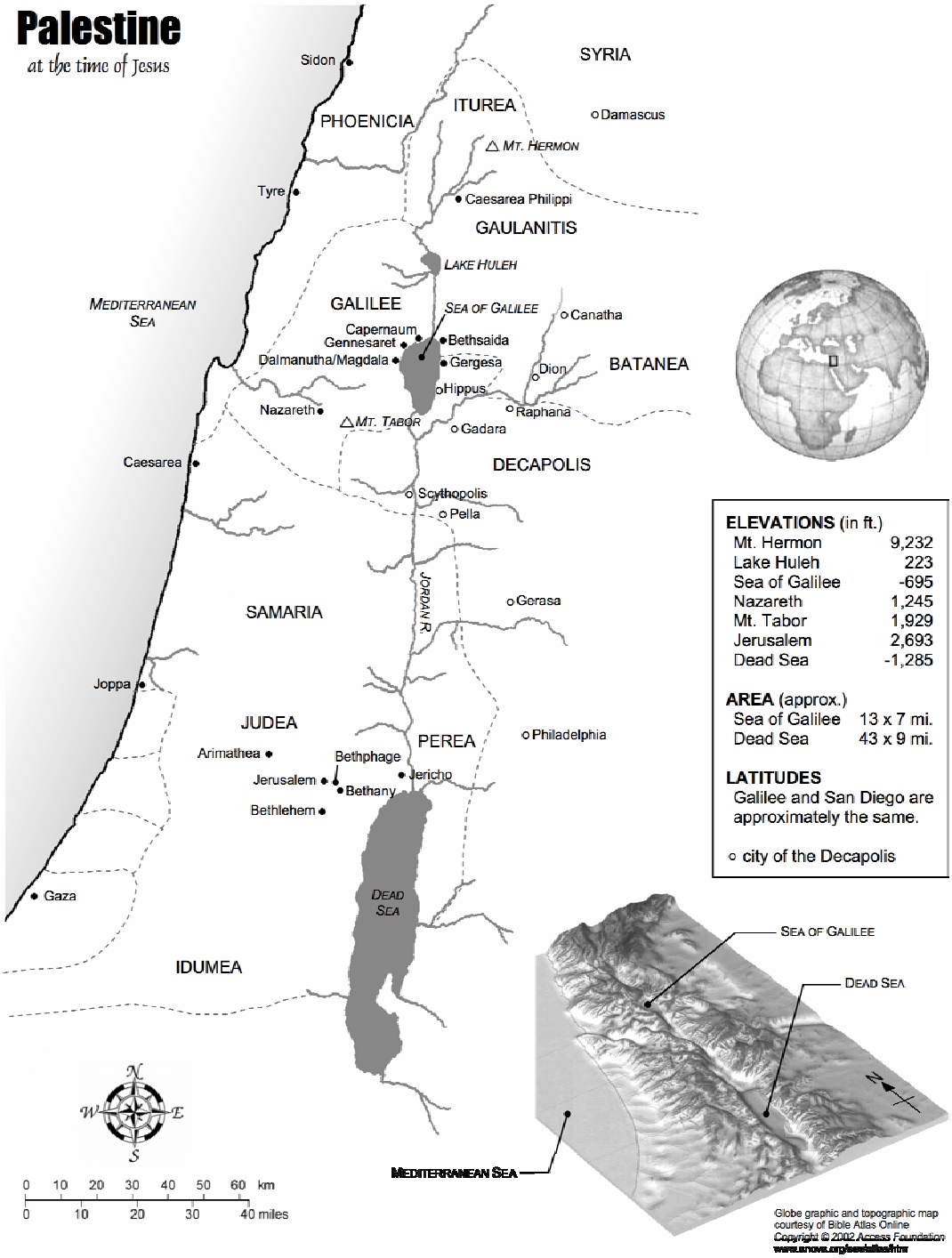
Sea of Galilee	13 x 7 mi.
Dead Sea	43 x 9 mi.

LATITUDES

Galilee and San Diego are approximately the same.

∘ city of the Decapolis




Palestine
at the time of Jesus
Sidon
SYRIA
PHOENICIA
ITUREA
Damascus
MT. HERMON
Tyre
Caesarea Philippi
GAULANITIS
LAKE HULEH
MEDITERRANEAN SEA
GALILEE
SEA OF GALILEE
Canatha
Capernaum
Gennesaret
Bethsaida
Dalmanutha/Magdala
Gergesa
Dion
BATANEA
Hippus
Nazareth
MT. TABOR
Raphana
Gadara
Caesarea
DECAPOLIS
Scythopolis
Pella
JORDAN R.
Gerasa
SAMARIA
Joppa
JUDEA
PEREA
Philadelphia
Arimathea
Bethphage
Jericho
Jerusalem
Bethany
Bethlehem
Gaza
DEAD SEA
IDUMEA
N
W
E
S
0 10 20 30 40 50 60 km
0 10 20 30 40 miles
ELEVATIONS (in ft.)
Mt. Hermon 9,232
Lake Huleh 223
Sea of Galilee -695
Nazareth 1,245
Mt. Tabor 1,929
Jerusalem 2,693
Dead Sea -1,285
AREA (approx.)
Sea of Galilee 13 x 7 mi.
Dead Sea 43 x 9 mi.
LATITUDES
Galilee and San Diego are approximately the same.
city of the Decapolis
SEA OF GALILEE
DEAD SEA
MEDITERRANEAN SEA
Globe graphic and topographic map courtesy of Bible Atlas Online
Copyright © 2002 Access Foundation

नये नियम की पुस्तकों की समीक्षा

- तीन प्रमुख वर्ग:
  - नये नियम का वृत्तान्त
    - नये नियम का लगभग 60%
    - पहली पाँच पुस्तकें
    - मत्ती– प्रेरितों के काम
  - नये नियम की पत्रियाँ
    - अगली 21 पुस्तकें
    - रोमियों – यहूदा
  - नये नियम की समाप्ति
    - अन्तिम पुस्तक
    - प्रकाशितवाक्य
- कार्य-प्रणाली
  - प्रत्येक सत्र की समीक्षा
  - प्रत्येक पुस्तक की समीक्षा
    - आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना
    - अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श

नये नियम की कहानी

- मसीह का जीवन तथा सेवकाई (मत्ती - यूहन्ना)
  - उसी प्रधान उद्देश्य के लिए लिखा गया
  - विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखा गया
  - विभिन्न श्रोतागण के लिए लिखा गया
- कलीसिया का जीवन तथा सेवकाई (प्रेरितों के काम)
  - लूका रचित सुसमाचार का "भाग 2"।
- मत्ती

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

  - लिखा गया...
    - एक यहूदी महसूल लेने वाले, मत्ती के द्वारा
    - 70-80 ए.डी. में, मन्दिर के विनाश के तुरन्त बाद में
    - यहूदियों मसीहियों को / या यीशु मसीह में विश्वास को ध्यान में रखने वाले यहूदियों को।
  - मुख्य विषय वस्तु: यीशु मसीह "यहूदियों का राजा है"
  - मुख्य पद: 1:20-23; 16:13-20; 28:18-20

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श ...

  - "परमेश्वर के राज्य", पर ध्यान केन्द्रित की ओर देखें - सम्पूर्ण रचना:
    - 1–4:11 राजा का परिचय
    - 4:12–7:29 राज्य की घोषणा
    - 8:1–10:42 राज्य की सामर्थ तथा लक्ष्य
    - 11:1–13:52 राज्य की पूछताछ

- 13:53–18:35 राज्य का स्वीकारना तथा विरोध
- 19:1–25:46 राज्य का ग्रहण करना तथा तिरस्कार करना
- 26–28 राजा की विजय
- प्रतिनिर्देश देखिए - 129 निर्देश पुराने नियम की 39 पुस्तकों में से 25 के लिए सांकेतिक संदर्भ हैं।
- जब हम यीशु मसीह की शिक्षाओं के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें अपने आपको सुनने वाले के स्थान में रखना याद रहना चाहिए।

■ मरकुस

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

➢ लिखा गया
- यूहन्ना मरकुस द्वारा जो पतरस के निकट था।
- 65–70 ए.डी. के बीच
- रोम में उन गैर-यहूदियों के लिए जो उत्पीड़न सहन कर रहे थे।

➢ मुख्य विषय वस्तु: "यीशु मसीह परमेश्वर का उत्पीड़त सेवक है"

➢ मुख्य पद: 8:31–38; 10:43-45

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ यीशु मसीह को मरकुस निरन्तर गतिमान रूप में ही दिखाता है।
- वह 41 बार कहता है, "और तुरन्त"

➢ ध्यान दें कि लगभग उसका आधा सुसमाचार यीशु मसीह के जीवन के अन्तिम सप्ताह को ही समर्पित है।

➢ सम्पूर्ण संरचना:
- गलील में दास की सेवकाई (1-9)
- यरूशलेम में दास की यात्रा (10)
- दास की अन्तिम सप्ताह की सेवकाई (11-15)
- दास की विजय (16)

➢ ध्यान दें: सहदर्शी सुसमाचार
- निश्चितता:
  मत्ती, मरकुस तथा लूका, यीशु मसीह की सेवकाई तथा जीवन को एक समान रूप में ही "देखते" हैं।
- भ्रम:
  क्या मत्ती तथा लूका के लिए, मरकुस प्रमुख स्रोत है?
  मरकुस के 97% शब्द मत्ती में है
  मरकुस के 88% शब्द लूका में हैं
  क्या कोई अज्ञात स्रोत था जो इन पुस्तकों की बुनियाद था?
- निष्कर्ष:
  मत्ती, मरकुस तथा लूका ने अपने सुसमाचार एक-दूसरे से नहीं अलग होकर लिखें।

■ लूका

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

➢ लिखा गया...
- लूका, एक गैर-यहूदी चिकित्सक, इतिहासकार और पौलुस का साथी।
- 70 या 80 ए.डी. में

- थियुफिलुस को, संपूर्ण तौर पर गैर-यहूदी मसीहियों को।

➢ प्रमुख विषय वस्तु: यीशु मसीह "मनुष्य का पुत्र" है जो यहूदी तथा गैर-यहूदी दोनों के लिए उद्धार लाता है।

➢ प्रमुख पद: 1:1-4; 15; 19:10 (मुख्य पद)

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ यह देखिये कि सम्पूर्ण संरचना किस प्रकार से, भौगोलिक तौर पर यरुशलेम की ओर अग्रसर होती है।

- मनुष्य के पुत्र का परिचय (1-4:13)
- गलील में मनुष्य का पुत्र (4:14-9:50)
- यहूदिया में मनुष्य का पुत्र (9:51-13:21)
- पेरिया में मनुष्य का पुत्र (13:22-19:27)
- यरूशलेम में मनुष्य का पुत्र (19:28-24:53)

➢ ध्यान दें, कि सुसमाचार में "निर्धनों के लिए शुभ सुसमाचार" और अनुयायियों अपने धन के द्वारा यीशु मसीह को आदर देने पर बल दिया गया है। (3:10-14; 12:13-21; 16:1-13, 16:19-31; 19:1-10)

➢ हर बार जब आप प्रार्थना देखें और / या पवित्र आत्मा का उल्लेख देखें तो टिप्पणी बनायें।

■ यूहन्ना

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

➢ लिखा गया...

- यूहन्ना द्वारा यह शिष्य "जिससे यीशु प्रेम रखता था।"
- 70-90 ए.डी. के बीच में
- संसार को

➢ मुख्य विषय वस्तु: यीशु मसीह "परमेश्वर का शाश्वत पुत्र है।"

➢ मुख्य पद: 1:1-14; 3:16; 20:30-31

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ मुख्य शब्द, जो सुसमाचार के संदेश का सार निकालते हैं, रेखांकित करें।

पिता (137) विश्वास (98), संसार (78), भेजा (60), प्रेम (57), जीवन, प्रकाश, अन्धकार, सच्चाई, गवाही, महिमा, शाश्वत

➢ यीशु मसीह के सात "मैं हूँ" कथनों पर ध्यान दें:-

- जीवन की रोटी (6:35, 41, 48, 51)
- संसार की ज्योति (8:12; 9:5)
- भेड़ों का द्वार (10:7, 9)
- अच्छा चरवाहा (10:11, 14)
- पुनरुत्थान व जीवन (11:25)
- मार्ग, सत्य व जीवन (14:6)
- सच्ची दाखलता (15:1, 5)

➢ यीशु मसीह के ईश्वरत्व को दिखाने के लिए, यूहन्ना सात "चिन्ह" को प्रयुक्त करके, देहधारण की विशिष्टता को दर्शाता है।

- पानी का दाखरस में परिवर्तन (2:1-11)
- राजकर्मचारी के पुत्र की चंगाई (4:46-54)
- सूखे अंग वाले की चंगाई (5:1-9)
- 5000 को भोजन खिलाना (6:1-14)

- तूफान को शान्त करना (6:16-21)
- अन्धे व्यक्ति को चंगाई (9:1-7)
- लाज़र का जिलाया जाना (11:38-45)

➢ यीशु मसीह को मानवता के, यूहन्ना द्वारा वर्णन पर भी ध्यान करें।

■ प्रेरितों के काम

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

➢ लूका द्वारा अपने सुसमाचार का "भाग दो" के रूप में लिखा गया
- लूका – यीशु मसीह ने क्या करना "आरम्भ" किया...
- प्रेरितों के काम– यीशु मसीह ने जिसे "जारी रखा"...

➢ प्रमुख विषय वस्तु: पवित्र-आत्मा की सामर्थ में, कलीसिया द्वारा सुसमाचार सर्वत्र फैलना है।

➢ प्रमुख पद: 1:8; 2:42-47

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ देखिए कि किस प्रकार से सम्पूर्ण संरचना भौगोलिक तौर पर यरूशलेम से दूर की ओर अग्रसर होता है।
- यरूशलेम में कलीसिया की गवाही (1-7)
- सामरिया तथा यहूदिया में कलीसिया की गवाही (8-9)
- पृथ्वी के छोर तक कलीसिया की गवाही (10-28)

➢ फिर से, जहाँ भी आप प्रार्थना या पवित्र-आत्मा लिखा देखें, टिप्पणी लिखें।

➢ "उद्धार" के दोहराया जाने को देखें (2:21; 2:47; 4:12; 5:31; 13:23; 13:26, 47; 16:31, 28:28) और सुसमाचार की वृद्धि के लिए "उन्नति-विवरण"
- 6:7– यरूशलेम में सुसमाचार
- 9:31– यहूदा और सामरिया में सुसमाचार
- 12:24– सीरिया में सुसमाचार
- 16:5– माइनर एशिया में सुसमाचार
- 19:29– यूरोप में सुसमाचार
- 28:31– रोम में सुसमाचार

➢ प्रेरितों के काम के विभिन्न भाषण में देखें कि किस प्रकार से विभिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न लोगों तक पहुँचने के लिए सुसमाचार को प्रासंगिक किया गया है।

■ नये नियम की पत्रियाँ

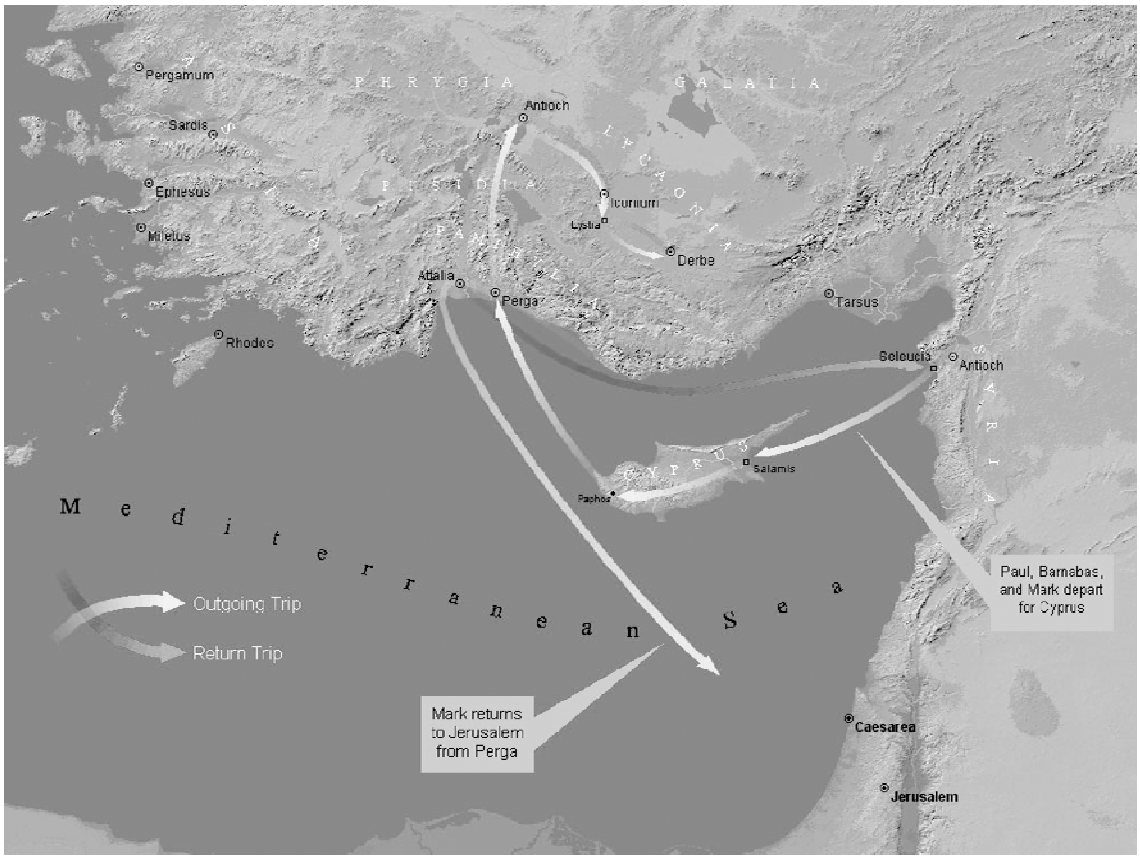
➢ नये नियम की 27 पुस्तकों में 22 पत्रियाँ हैं -अर्थात नये नियम का 35% से अधिक

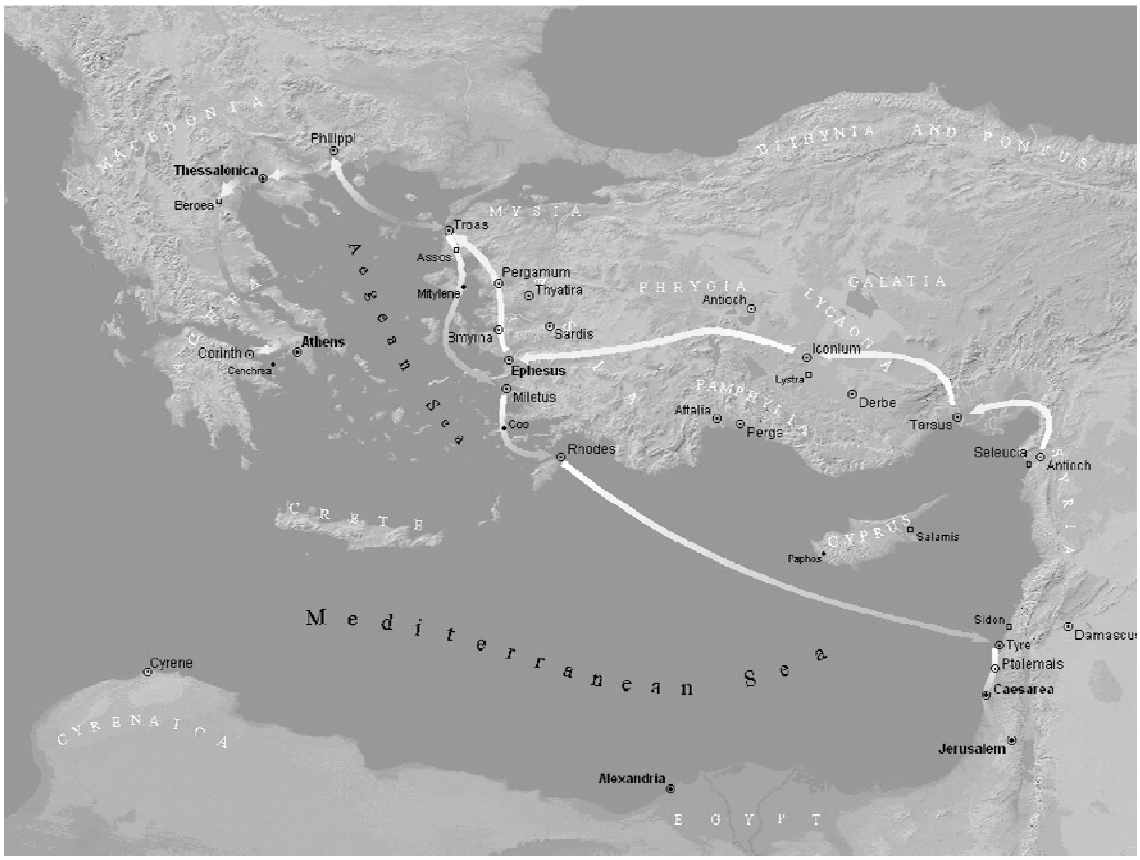
➢ पत्रियाँ क्यों?
- कलीसिया संख्या में बढ़ रही है
- कलीसिया सम्बन्धात्मक है

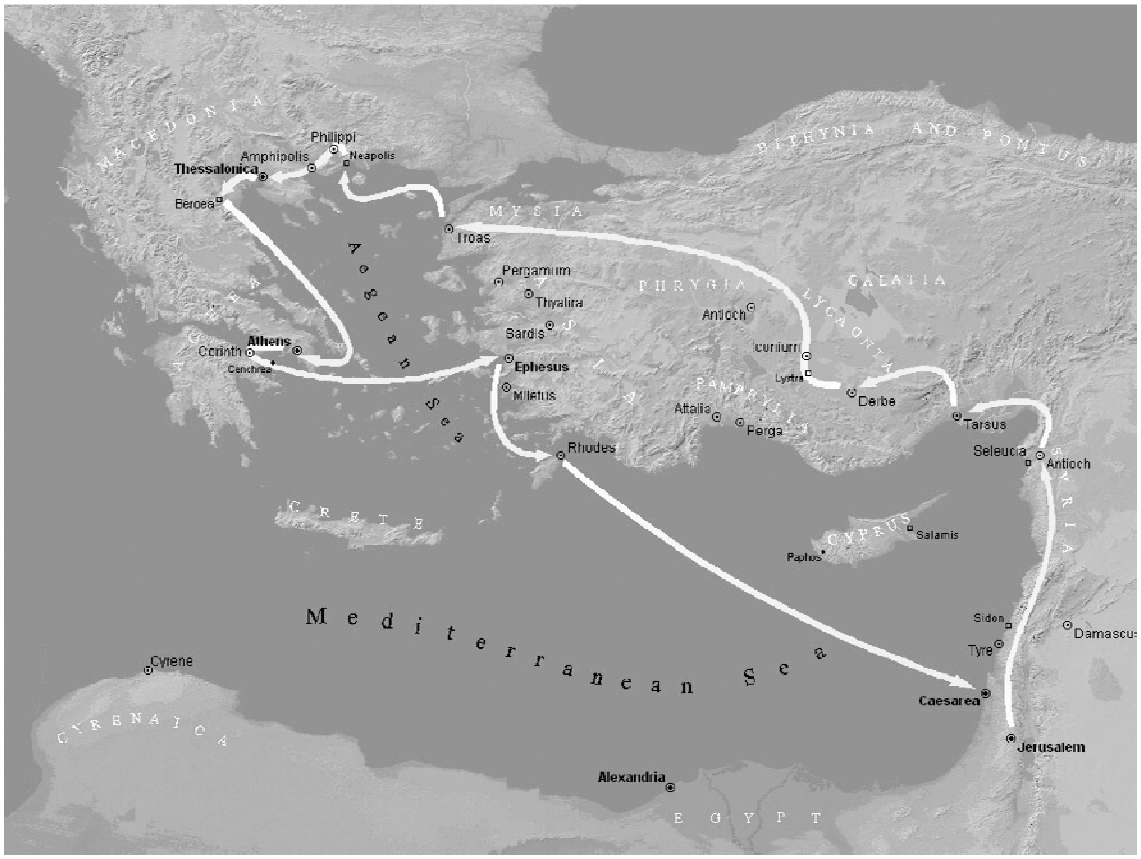
➢ दो समूह...
- पौलुस के पत्र (रोमियों -फिलेमोन)
- सार्वजनिक पत्र (इब्रानियों- यहूदा)

पौलुस का जीवन और उसके लेख...

- पौलुस ने नये नियम की 13 पत्रियाँ लिखी हैं।
  - लम्बे से छोटे क्रमानुसार
  - नौ कलीसिया को लिखे गये, चार व्यक्तियों को लिखे गये
- पौलुस एक व्यक्ति...
  - तारसुस में उत्पन्न हुआ शाऊल
- विविध पृष्ठभूमि
  - एक इब्री धरोहर
  - यूनानी शिक्षा
  - एक रोमी नागरिक
  - 31-33 ए.डी. के आस-पास यीशु मसीह को ग्रहण किया
- पौलुस एक धर्म सेवक...
  - पहली मिशनरी यात्रा (48-49)
    लगभग 1400 मील
    पत्री: गलातियों की पत्री
  - यरूशलेम की सभा (49)
  - दूसरी मिशनरी यात्रा (49-52)
    लगभग 2800 मील
    पत्रियाँ: 1-2 थिस्सलुनीकियों
  - तीसरी मिशनरी यात्रा (53-57)
    लगभग 2700 मील
    पत्रियाँ: रोमियों, 1-2 कुरिन्थियों
  - कैसरिया में बन्दी (58-60)
  - रोम को जाना (60-61)
  - रोम में पहली बार कैद (61-63)
    पत्रियाँ (बन्दीग्रह की पत्रियाँ कहलाती हैं): फिलिप्पियों, इफिसियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन)
  - अंतिम कैद तथा अंतिम सेवकाई
    पत्रियाँ (पास्तरीय पत्रियाँ कहलाती हैं) 1-2 तीमुथियुस, तीतुस
- पौलुस एक लेखक...
  - अभिनन्दन और अभिवादन
  - धन्यवाद और आशीष
  - मुख्य भाग
  - प्रबोधन और निवेदन
  - समाप्ति


Pergamum
PHRYGIA
GALATIA
Antioch
Sardis
Ephesus
Iconium
Lystra
Miletus
Derbe
Attalia
Perga
Tarsus
Rhodes
Seleucia
Antioch
SYRIA
CYPRUS
Salamis
Paphos
Mediterranean Sea
Outgoing Trip
Return Trip
Paul, Barnabas, and Mark depart for Cyprus
Mark returns to Jerusalem from Perga
Caesarea
Jerusalem


MACEDONIA
Philippi
Thessalonica
Berea
BITHYNIA AND PONTUS
MYSIA
Troas
Assos
Pergamum
Thyatira
Mitylene
PHRYGIA
Antioch
GALATIA
Smyrna
Sardis
Corinth
Cenchrea
Athens
Iconium
Ephesus
Lystra
Miletus
Derbe
PAMPHYLIA
Attalia
Perga
Tarsus
Coo
Rhodes
Seleucia
Antioch
SYRIA
CRETE
CYPRUS
Salamis
Paphos
Mediterranean Sea
Sidon
Damascus
Tyre
Ptolemais
Caesarea
Cyrene
CYRENAICA
Jerusalem
Alexandria
EGYPT



■ रोमियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

- रोम में यहूदी और गैर-यहूदी मसीहियों के लिये लिखी गई
- प्रमुख विषय वस्तु: "परमेश्वर की धार्मिकता" और परमेश्वर का "सुसमाचार"
- त्रि-उद्देश्य:
  - सुसमाचार के आधारभूत सिद्धान्तों में कलीसिया को शिक्षा देना
  - सुसमाचार का व्यवहारिक सम्बन्ध दर्शाना
  - जहां पहुंच नहीं हुई लोगों के लिए, सुसमाचार के विस्तार के लिये सहायता का संग्रह करना।
- प्रमुख पद: 1:16-17; 3:21-26; 8:28-39

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श:

- सम्पूर्ण संरचना:
  - धार्मिकता के लिए आवश्यकता (1-3)
  - परमेश्वर द्वारा धार्मिकता की अभिपूर्ति (3-8)
  - परमेश्वर की धार्मिकता का इस्राएल द्वारा तिरस्कार (9-11)
  - धार्मिकता का अभ्यास (12-16)
- महत्वपूर्ण मसीही सिद्धान्तों को देखें जिनसे यह पत्र भरा हुआ है: प्रगटीकरण, भ्रष्टता, पापमुक्ति, प्रायश्चित, विश्वास, प्रारंभिक पाप, यीशु मसीह से मेल-मिलाप, अंगीकरण, पवित्रीकरण, गौरवान्वित होना, इस्राएल का चुना जाना, आत्मिक वरदान, शासन के लिए आदर।
- इसे पढ़िये, अध्ययन कीजिए, याद कीजिए... यह पुस्तक परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन को खोलने की कुन्जी है।

■ 1 कुरिन्थियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ...

- कुरिन्थ में एक विभाजित कलीसिया को लिखी गई
- मुख्य वस्तु "क्रूस की बुद्धिमानी"
- मुख्य पद: 1:18-31; 2:14; 6:18-20; 10:12-13; 13:4-8

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- पत्रियों के पुस्तक की समाप्ति को देखें:
  - क्रूस (1:17-2:16)
  - पुनरुत्थान (15:1-58)
- ध्यान कीजिए कि किस प्रकार पौलुस का एक सिद्धान्त विकसित करता है जो मसीही नीति-वाद, मसीही प्राथमिकताएं और मसीही प्रवृत्ति को प्रभावित करता है।
- यह देखिए कि किस प्रकार से पौलुस कलीसिया में कम से कम 11 विभिन्न विषयों को सम्बोधित करता है जिनमें आत्मिक वरदानों का उद्देश्य आराधना की नियमितताएं और कामुक अनैतिकता शामिल है।

■ 2 कुरिन्थियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचनाएं ....

- कुरिन्थ में मतभेद के बीच कलीसिया को लिखा गया
- मुख्य विषय वस्तु: यीशु मसीह की देह में मेल-मिलाप
- पत्र में चार मुख्य तत्व:
  - कुरिन्थ में जाने के लिए पौलुस की अपनी योजनाओं का स्पष्टिकरण
  - यरूशलेम की कलीसिया के लिए पौलुस का संग्रहण
  - पौलुस द्वारा की प्रेरिताई और सेवकाई का बचाव
  - सुसमाचार के प्रति यहूदी मसीहियों के विरोध के बारे में पौलुस की चिंता
- मुख्य पद: 4:5-6, 16-18; 5:17-19, 8-9

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - पौलुस की सेवकाई के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया (1-7)
  - कलीसिया का योगदान (8-9)
  - पौलुस की सेवकाई का बचाव (10-13)
- इस पुस्तक में पौलुस के हृदय को अनुभव करें– उसके व्यक्तिगत तथा निजी पत्रों में से एक पत्र
- इन प्रबल विषयों-वस्तुओं को देखें:– क्षमा, पुन: स्थापना, मसीही योगदान– एक उदारता के रूप में (कृपा के रूप में नहीं) सताव, और आत्मिक विजय।

■ गलातियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- यरूशलेम की सभा को प्रतिक्रिया में लिखा गया (प्रेरितों के काम 15)
- पौलुस उन यहूदियों का सामना करता है जो कलीसिया में प्रवेश करने के लिए गैर-यहूदियों पर नियन्त्रण लगाते हैं।
- पौलुस विश्वास और कार्यों के मिथ्य सुसमाचार को दोषी ठहराता है।
  - मिथ्य सुसमाचार: विश्वास + कार्य = पापमुक्ति
  - सत्य सुसमाचार: विश्वास = पापमुक्ति + कार्य
- प्रमुख पद: 2:20-21; 5:1; 5:13-16; 6:14

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श:–

- सम्पूर्ण संरचना
  - अनुग्रह तथा सुसमाचार (1-2)
  - अनुग्रह तथा नियम (3-4)
  - अनुग्रह तथा आत्मा (5-6)
- मुख्य शब्दों को रेखांकित करें: नियम (32), देह (16), कार्य (7), खतना (13), यीशु मसीह (38) आत्मा (17), विश्वास/ भरोसा (26), अनुग्रह (8), दोषमुक्त (8), इब्राहीम (9), प्रतिज्ञा (10), पुत्र / वंश (18), स्वतन्त्रता (10) दासत्व (11), गैर-यहूदी (10)
- विधिवादिता का खतरा और यीशु मसीह में स्वतंत्रता के आनन्द को देखें।

■ इफिसियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- इफिसुस तथा निकट-वर्तीय क्षेत्रों की कलीसिया के नेताओं को बन्दीगृह से लिखा गया।
- तीन मुख्य विषय वस्तु:
  - कलीसिया की एकता
  - मसीह की विजय
  - आत्मा का सामर्थ
- मुख्य पद: 1:3-14; 2:8-10; 4:11-13; 6:10-20

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श ...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - कलीसिया का सिद्धान्त (1-3)
  - कलीसिया का आचरण (4-6)
- प्रत्येक बार आप जब "प्रेम" (अगापे) शब्द को पाते हैं तो उसे रेखांकित करें।
- प्रत्येक बार आप जब "मसीह में" या "मसीह के साथ" शब्दों को पाते हैं, तो उन्हें रेखांकित करें - 35 बार।

■ फिलिप्पियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- फिलिप्पी (एक रोमी उपनगर) में स्थित कलीसिया को बन्दीगृह से लिखा गया
- इपफ्रुदीतुस द्वारा वितरण– "परमेश्वर का जुआरी"
- मुख्य विषय वस्तु: मसीह में आनन्द तथा एकता
- मुख्य पद: 1:21; 2:5-11; 3:8-11; 4:9-13

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - मसीह हमारा जीवन है (1)
  - मसीह हमारा उदाहरण है (2)
  - मसीह हमारा ध्येय है (3)
  - मसीह हमारी शक्ति है (4)
- "मसीह के गीत" को देखें– 2:5-11
  - यीशु परमेश्वर है
  - यीशु मनुष्य है
  - यीशु उद्धारकर्ता है
  - यीशु प्रभु है।

- फिलिप्पियों का आनन्द उठायें– पौलुस के पत्रों में यह निर्मल श्वांस की तरह है।
- एक शिष्य बनाने वाले के हृदय की सुनें– उत्पीड़ित से उत्पीड़ित को लिख रहा है।

■ कुलुस्सियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- एक कलीसिया जो इपुफ्रुस ने स्थापित की और जहाँ पौलुस कभी नहीं गया था।
- पौलुस कुलुस्से में आत्मिक ज्ञान रखने वालों का विरोध कर रहा है जो मसीह के ईश्वरीयत्व को अस्वीकारते हैं।
- मुख्य विषय वस्तु: मसीह की पर्याप्ति। "यीशु मसीह ही सर्वस्व है" (3:11) और हम "उसमें पूर्ण होते हैं" (2:10)
- मुख्य पद: 1:15-20; 2:8-10; 3:1-3

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- कुलुस्सियों में मसीह के चित्र को देखें:
  - प्रत्येक वस्तु का सिर है (1:18; 2:10)
  - सृष्टि का प्रभु (1:16-17)
  - मेल-मिलाप का प्रवर्तक (1:20-22; 2:13-15)
  - विश्वासी की आशा का आधार (1:5, 23, 27)
  - विश्वासियों की सामर्थ का मूल (1:11, 29)
  - छुड़ाने वाला तथा मेल-मिलाप कराने वाला (1:14, 20-22; 2:11-15)
  - परमेश्वर की अभिव्यक्ति (1:15, 19; 2:9)
  - प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता और सम्भालने वाला (1:16-17)
  - पूर्णतया पर्याप्त उद्धारकर्ता (1:28; 2:3, 20; 3:1-4)
- पढ़ते समय इन मुख्य शब्दों को चिन्हित करें: सब, पूर्णता, सम्पूरित, प्रधानता, पर्याप्तता
- एक जीवन जो सिर्फ मसीह द्वारा संभाला हुआ है उसके व्यवहारिक आशय को देखें ।

■ 1 थिस्सलुनीकियों

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- थिस्सलुनीके की नई कलीसिया के लिए कुरिन्थ से लिखा गया
- पौलुस का चतुर्कोणीय उद्देश्य:
  - नये विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिए
  - पौलुस के विरुद्ध लगाये गये आरोपों का उत्तर देने के लिए
  - यीशु मसीह का दूसरा आगमन समझाने के लिए
  - आलस्य के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए
- मुख्य पद: 1:4-10; 4:1-3; 4:13-18

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना (1:3 पर आधारित)
  - विश्वास द्वारा उत्पन्न कार्य (1-3)
  - प्रेम द्वारा प्रेरित परिश्रम (4:1-12)
  - आशा द्वारा प्रेरित सहनशीलता (4:13-5:28)
- ध्यान दीजिए किस प्रकार हर अध्याय मसीह के आने के संदर्भ से समाप्त होता है।
  - मसीह का आना तथा उद्धार (1:9-10)
  - मसीह का आना तथा सेवा (2:19-20)
  - मसीह का आना तथा स्थिरता (3:13)

- मसीह का आना तथा दु:ख (4:18)
- मसीह का आना तथा पवित्रीकरण (5:23)

➢ 1 थिस्सलुनीकियों में शिष्य बनाने के बारे में वर्णन है
- वचन बाँटना (1:4-5)
- वचन दर्शाना (1:5-6)
- वचन सिखाना (1:6)
- संसार की सेवा (1:7-10)
- शिष्य बनाने का आनन्द (2:19-20)

➢ पौलुस द्वारा "पवित्रीकरण" पर बल दिये जाने पर ध्यान दें (4:3, 4, 7) तथा यीशु मसीह के आने पर (1:10; 2:19; 3:13; 4:15; 5:23)।

➢ शब्द की केंद्रियता पर ध्यान दें (1:5, 6, 8; 2:2, 4, 8, 9, 13)

■ **2 थिस्सलुनीकियों**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

➢ थिस्सलुनीके को एक अनुवर्ती पत्र के रूप में लिखा गया

➢ पौलुस का त्रिकोणीय उद्देश्य:
- जो विश्वासी अत्यधिक उत्पीड़न सह रहे हैं, उनको प्रोत्साहित करना।
- काम करने में आलस्य लोगों को यीशु मसीह की महिमा के लिए कार्य करने को प्रोत्साहित करना जब तक वह वापिस न आये।
- अपनी <u>पवित्रता</u> की खोज में विश्वासियों की उन्नत्ति करना।

➢ मुख्य पद: 2:1-4; 3:1-5, 16

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ ध्यान दीजिए कि किस प्रकार से 47 में से 18 पद "यीशु मसीह के <u>दिन</u>" के विषय में बताते हैं।

➢ इन मुख्य शब्दों को बहुत ध्यान-पूर्वक देखें:– न्याय, प्रतिफल, विनाश।

➢ इस पुस्तक को आपको यह याद दिलाने दीजिए कि आप इस अपेक्षा में ही जीवित रहें कि "शायद यह आज हो।"

■ **1 तीमुथियुस**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

➢ <u>जवान</u> तीमुथियुस को प्रोत्साहित करने को लिखी गई थी जब वह इफिसुस में उस शहर की बड़ी कलीसिया की अगुवाई कर रहा था।

➢ मुख्य विषय वस्तु: परमेश्वर चाहता है <u>धार्मिक</u> नेतृत्व-कर्ता उसकी कलीसिया का नेतृत्व करें।

➢ मुख्य पद: 3:14-16; 4:12; 6:11-12

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ सम्पूर्ण संरचना:
- कलीसिया के सिद्धान्त की रक्षा (1)
- कलीसिया की आराधना की रक्षा (2)
- कलीसिया के नेतृत्व की रक्षा (3)
- कलीसिया की पवित्रता की रक्षा (4)
- कलीसिया की प्रथा की रक्षा (5-6)

- इन मुख्य शब्दों पर विशेष ध्यान दें– उत्तरदायित्व, आज्ञा (1:3, 5, 18; 4:11; 5:7; 6:13, 17), विश्वस्त सिद्धान्त (1:10; 4:6; 6:1-3), चाल-चलन, धार्मिकता (2:2; 10:3, 16; 4:7, 8, 6:3, 5, 6, 11)
  - इस पत्र को पढ़ते समय, स्वयं को तीमुथियुस के स्थान पर रखें।

2 तीमुथियुस

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- पौलुस अपना यह अन्तिम पत्र अपनी मृत्यु तथा उसके मुकद्दमे की प्रक्रिया की प्रतीक्षा करते हुए लिखता है।
- पौलुस यह दर्शाता है कि कैसे एक मसीही शहीद को अपनी मृत्यु का सामना करना चाहिए।
- मुख्य पद: 1:7; 2:1-4; 3:14-4:5

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - पास्तरीय निवेदन (1)
  - व्यवहारिक निवेदन (2)
  - भविष्यसूचक निवेदन (3)
  - व्यक्तिगत निवेदन (4)
- अध्याय 2 में एक सफल सेवकाई के कार्य की छवि देखें
  - एक पुन:उत्पन्न सेवकाई (1-2)
  - एक सहनशीलता की सेवकाई (3-13)
  - एक अध्ययनशील सेवकाई (14-18)
  - एक पवित्र सेवकाई (19-16)
- तीमुथियुस के लिए पौलुस की चिंता के बोझ को अनुभव करें
- कलीसिया के लिए पौलुस की चिंता के बोझ को अनुभव करें
  - 1 तीमुथियुस– "कुछ लोग भटक गये" (1:6), "कुछ लोगों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया" (1:19), "कुछ शैतान के पीछे हो गये" (5:15), "कुछ लोग अपने भटक गये" (6:10), "कुछ ने गलतियाँ की" (6:21)
  - 2 तीमुथियुस "सब मुझसे दूर चले गये हैं" (1:15), " सब ने मुझे छोड़ दिया है" (4:16)

तीतुस

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- क्रेते की एक कलीसिया का अगुवा तीतुस को लिखा गया है जिसने पौलुस द्वारा यीशु मसीह को ग्रहण किया (2 कुरि. 8:23)
- चार कोणीय उद्देश्य:
  - कलीसिया में अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए तीतुस को याद कराना।
  - तीतुस को कलीसिया में झूठे प्रचारकों के विरुद्ध चेतावनी देना।
  - तीतुस को आज्ञा देना कि किस प्रकार से विभिन्न लोगों की कलीसिया में नेतृत्व करेगा।
  - तीतुस को कलीसिया में अनुग्रह के महत्व के बारे में प्रोत्साहित करना।
- मुख्य विषय वस्तु: "अनुग्रह ईश्वरीयत्व की ओर ले जाता है" (1:4; 2:11; 3:7, 15)
- मुख्य पद: 2:11-14; 3:3-8

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - कलीसिया को सुव्यवस्थित करना (1)
  - यीशु मसीह का अनुसरण करना (2-3)
- अच्छे कार्यों पर बल देने के बारे में विशेष ध्यान दें– (1:16; 2:7, 14; 3:1, 5, 8, 14) तथा विश्वास (1:1, 4, 13; 2:10, 13; 3:15)

■ **फिलेमोन**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- लिखा गया
  - कुलुस्से में, फिलेमोन नामक एक मसीही को जिसने पौलुस द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास किया।
  - उनेसिमुस के बारे में, फिलेमोन का गुलाम जिसने पौलुस द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास किया।
- पौलुस लिखता है...
  - फिलेमोन को, उनेसिमुस के उद्धार के बारे में
  - फिलेमोन से कहता है कि उसको क्षमा करे
  - फिलेमोन के पास जाने को निवेदन करता है।
- मुख्य पद: 15-18

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- खोये हुए पापियों के मुक्तिदाता के रूप में यीशु मसीह की छवि को देखें
- गुलामी पर सुसमाचार का प्रभाव देखें
- यह देखें कि किस प्रकार से यीशु मसीह हमारे सम्बन्धों को परिवर्तित कर देता है।

सामान्य पत्रिकाएँ

- नौ पत्रिकाएँ पौलुस द्वारा नहीं लिखी गई हैं
- मुख्यत: लम्बाई के आधार पर व्यवस्थित की गई हैं।
- उनके लेखकों के नाम के अनुसार, उनका नाम रखा गया है–
  - याकूब, पतरस, यूहन्ना, यहूदा और इब्रानियों का लेखक
- अधिक सर्वसाधारण श्रोतागण को लिखी गई है।

■ **इब्रानियों**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- इब्रानियों की पत्री किसने लिखी?
  - सिर्फ परमेश्वर जानता है!
- बहुधा सह रहे यहूदी मसीहियों को लिखी गई
- मुख्य विषय वस्तु: यीशु मसीह की श्रेष्ठता
- इब्रानियों का संदेश, पाँच प्रोत्साहनों के चारों ओर घूमता है (13:22- प्रोत्साहन का एक शब्द)
  - वचन से दूर न जायें (2:1-4)
  - वचन पर सन्देह न करें (3:7-4:13)
  - वचन के प्रति उदासीन न हों (5:11-6:20)
  - वचन से घृणा न करें (10:26-39)
  - वचन की अवज्ञा न करें (12:14-19)

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:

- एक उत्कृष्ट मनुष्य: यीशु मसीह (1-6)
- एक उत्कृष्ट पुरोहिताई (7-10)
- एक उत्कृष्ट सिद्धान्त: विश्वास (11-13)

➢ यह देखिए कि यह मुख्य शब्द किस प्रकार से यीशु मसीह की सहायता की ओर संकेत करते हैं:
- श्रेष्ठतर (1:4; 6:9; 7:7, 19, 22; 8:6; 9:23; 10:34; 11:16, 35, 40; 12:24)
- परिपूर्ण (2:10; 5:9, 14; 6:1; 7:11, 19, 28; 9:9, 11; 10:1, 14; 11:40; 12:2, 23)

➢ इब्रानियों में हर स्थान पर पुराने नियम को देखें और अध्ययन करें
- भजन संहिता 8:4-6, 2:5-18 में
- भजन संहिता 95:7-11, 3:7-4:13 में
- भजन संहिता 110:4, 4:16-7:28 में
- यिर्मयाह 31:31-34, 8:1-10:18 में
- हबक्कूक 2:3-4, 10:32-12:3 में
- नीतिवचन 3:11-12, 12:4-13 में
- निर्गमन 19, 12:18-29 में

➢ याद रखने के लिए:-
- यूनानी पुराने नियम से लेखक लिख रहा है
- लेखक कई बार, लघु से महान तक तर्क-वितर्क करता है
- लेखक, पुराने नियम में हर चीज को मसीह की दृष्टि से देखता है।

■ **याकूब**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

➢ सम्भवत: यीशु मसीह के भाई, याकूब द्वारा लिखी गई

➢ सच्चे विश्वास की व्यवहारिक संक्षिप्तता को सम्बोधन करने के लिये लिखी गई। व्यवहार में मसीहियत किस प्रकार की लगती है?

➢ मुख्य पद: 1:2-5; 2:14-17

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ सम्पूर्ण संरचना:
- आत्म विश्वास से खड़े रहें (1)
- दया से सेवा करे (2)
- सावधानी से बोले (3)
- पश्चाताप से समर्पण करें (4)
- सहानुभूति से बाँटें (5)

➢ पूरे याकूब की पत्री में पुराना नियम को देखें- 108 पदों में, पुराने नियम की 22 पुस्तकों का सन्दर्भ है और कम से कम यीशु मसीह की शिक्षाओं के 15 सन्दर्भ हैं।

➢ सामाजिक न्याय पर बल को ध्यानपूर्वक देखें (1:9-11, 27; 2:1-13; 4:13-5:6)

➢ इस पुस्तक की तुलना रोमियों के साथ करें...
- परमेश्वर के सामने हमारा खड़ा होना पौलुस दर्शाता है
- संसार के सामने याकूब हमारे गवाह सम्बोधित करता है।

■ **1 पतरस**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- एशिया माइनर में कलीसिया को लिखी गई– आधुनिक समय की तुर्की - अत्यधिक कष्ट तथा उत्पीड़न को सहन करते हैं।
- मुख्य विषय वस्तु: परमेश्वर की पर्याप्तता है अनुग्रह, जो हर अध्याय में प्रयुक्त हुआ है (1:2, 10, 13; 2:19-20; 3:7; 4:10; 5:5, 10, 12)
- मुख्य पद: 1:3-7; 3:15-17, 4:12-13

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- सम्पूर्ण संरचना:
  - पवित्र जीवन के लिए एक बुलाहट (1:13-2:10)
  - मूर्तिपूजकों के लिए रहना (2:11-4:11)
  - कलीसिया की तरह, कष्टों से गुजरना (4:12-5:11)
- पढ़िए और इफिसियों के साथ तुलना करें
  - 1 पतरस 1:12; इफिसियों 3:5, 10
  - 1 पतरस 2:2; इफिसियों 4:13, 15
  - 1 पतरस 4:10; इफिसियों 4:7, 11
  - 1 पतरस 4:11; इफिसियों 3:6, 21
- इन मुख्य शब्दों पर विशेष ध्यान दें: कष्ट उठाना (16 बार), व्यवहार/ जीवन की राह (6 बार), परमेश्वर (39 बार), यीशु मसीह (22 बार), आत्मा (8 बार), परमेश्वर की इच्छा (4 बार), बुलाहट (10 बार), उद्धार (6 बार), आशा (5 बार)
- क्लेश और उत्पीड़नों के बीच यह सीखें कि किस प्रकार से मसीही जीवन जी सकते हैं।

■ **2 पतरस**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- यह पत्र लिखते समय, सम्भवत: पतरस मृत्युदंड की प्रतीक्षा कर रहा है
- मुख्य विषय वस्तु अनुग्रह और ज्ञान में वृद्धि
- मुख्य पद: 1:20-21; 3:8-11
- कलीसिया के बारे में 1 पतरस की विषय वस्तु से तुलना करें:
  - उत्पीड़न के साथ, शैतान एक सिंह की नाई समाप्त करने के लिए आ सकता है (1 पतरस)
  - मिथ्या सिद्धान्तों के साथ, शैतान धोखा देने के लिए एक सर्प की नाई आ सकता है (2 पतरस)

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श:

- सम्पूर्ण संरचना:
  - उसके अनुग्रह में वृद्धि करें (1:1-11)
  - उसके आने की बाट जोहे (1:12-21)
  - उसके न्याय में विश्वास करें (2)
  - उसके वचन को थामे रहें (3)
- बलिदानी का सामना करने के लिए दो दृष्टिकोणों को जानने के लिए 2 तीमुथियुस से तुलना करें।
- 2 पतरस 1:19-21 में बाइबल के प्रेरणा व्याख्या को ध्यान-पूर्वक देखें।

■ **1 यूहन्ना**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- यूहन्ना पाँच उद्देश्य बनाता है:

- हमारी सहभागिता हो (1:3)
- हम आनन्दित हों (1:4)
- हम पाप न करें (2:1-2)
- हम गलतियों पर नियन्त्रण पायें (2:26)
- हम आश्वस्त रहें (5:13)

➢ मुख्य विषय-वस्तुएं:-
- परमेश्वर ज्योति है (1:5)
- परमेश्वर प्रेम है (4:8, 16)
- परमेश्वर जीवन है (1:1-2; 5:11-13)

➢ मुख्य पद: 1:5-2:2; 5:11-13

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ देखिये कि किस प्रकार से यूहन्ना सरल बुनियादी शब्द बार-बार प्रयोग करता है: प्रेम (46 बार), जानना (40 बार), पाप (27 बार), बने रहना (24 बार), संसार (23 बार), जीवन (13 बार)

➢ आप जब अध्ययन करते हैं, तो 1 यूहन्ना को एक सुव्यवस्थित तर्क-वितर्क के बदले एक संगीतमय प्रबन्ध के आधार में देखें।

■ **2 यूहन्ना**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

➢ यह एक स्थानीय कलीसिया या एक स्थानीय कलीसिया की एक माननीय स्त्री को लिखा गया।

➢ कलीसिया के लिये आवश्यक है कि यह...
- देहधारण के सिद्धान्त की रक्षा करे
- मिथ्या शिक्षकों से दूर रहें

➢ मुख्य पद: 6-11

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श:

➢ सम्पूर्ण संरचना:
- सच्चाई का अभ्यास (1-6)
- सच्चाई की रक्षा (7-11)

➢ उन शब्दों को ध्यान-पूर्वक देखें जो बार दोहराये गये हैं: आज्ञा (14), सच्चाई (9), चलना, प्रेम, सिखाना, धोखा देने (भरमाने) वाले

■ **3 यूहन्ना**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

➢ बाइबल में सबसे छोटी पुस्तक

➢ चार पात्र हैं:-
- यूहन्ना, जिसने लिखा
- गयुस, जिसने इसे ग्रहण किया
- दियुत्रिफेस, जो इसका कारण है
- देमेत्रियुस, जिसने इसे संचारित किया

➢ प्रमुख विषय वस्तु: कलीसिया में पहुनाई

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

➢ सम्पूर्ण संरचना:
- गयुस:- एक समृद्ध मसीही (1-8)

- दियुत्रिफेस:- एक घमण्डी मसीही (9-10)
- देमेत्रियुस:– एक हँसमुख मसीही (11-12)

■ **यहूदा**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- यीशु मसीह के भाई, यहूदा द्वारा लिखी गई
- प्रमुख विषय वस्तु: "विश्वास के लिए संघर्ष करना" (3)
- द्विकोणीय उद्देश्य:
  - कलीसिया में अधर्मियों की प्रथाओं को दोषी ठहराना
  - विश्वासियों को विश्वास को थामे रहने के लिए सम्मति देना
- मुख्य पद: 3, 24

अध्ययन के लिए व्यवहारिक परामर्श...

- पुराने नियम के सात उदाहरणों के आधार पर मिथ्या उपदेशकों के बहिष्कार को देखें–
  - इस्राएल (5)
  - पतित स्वर्गदूत (6)
  - सदोम और अमोरा (7)
  - मीकाईल और मूसा (8-10)
  - कैन (11)
  - बालाम (11)
  - कोरह (11)
- यहूदा अपनी कलीसिया को अन्त तक रखने के लिए यीशु मसीह की शक्ति के ऊपर दबाव डालता है।

प्रकाशितवाक्य

- इसकी शैली क्या है?
  - भविष्यसूचक साहित्य (1:1)
  - भविष्यवाणी (1:3)
  - पत्र (1:4)
  - इस पुस्तक का कोई प्रतिरुप नहीं है...

■ **प्रकाशितवाक्य**

आरम्भकों के लिए प्राथमिक सूचना ....

- लिखा गया...
  - यूहन्ना द्वारा जब वह पतमोस में निर्वासित था
  - पहली शताब्दि में उत्पीड़न सह रहे मसीहियों के लिए
  - परमेश्वर के राज्य के भविष्य तथा सुसमाचार के बारे में
- प्रमुख विषय वस्तु: यीशु मसीह का प्रकाशन
- प्रमुख पद: 1-5; 19-22

अध्ययन के लिये व्यवहारिक परामर्श...

- प्रकाशितवाक्य में सर्वत्र, पुराने नियम को देखें...
  - 404 पदों में से 278 पदों में पुराने नियम के संदर्भ हैं!

- अधिकतर भजन संहिता, दानिय्येल, जकर्याह, उत्पत्ति, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और योएल के सन्दर्भ हैं।

➢ देखिए कि किस प्रकार से उत्पत्ति और प्रकाशितवाक्य बाइबल के पुस्तक-समाप्ति रूप में क्या करते हैं।

- आकाश तथा पृथ्वी का निर्माण (उत्पत्ति 1-2)
  - नये आकाश तथा पृथ्वी की संरचना (प्रकाशितवाक्य 21-22)
- पहले आदम का पृथ्वी पर वास करना (1:26)
  - अन्तिम आदम का महिमा में वास करना (21:5)
- रात्रि तथा समुन्दरों की संरचना (1:5, 10)
  - और रात नहीं, और समुद्र नहीं (21:1, 25)
- आदम के पास एक दुल्हन को लाना (2:18-25)
  - यीशु मसीह के लिए उसकी दुल्हन की तैयारी (19:7)
- अदन में जीवन का वृक्ष (2:9; 3:22)
  - नई संरचना में जीवन का वृक्ष (22:2)
- शैतान के द्वारा पहला झूठ बोलना (3:1)
  - कोई झूठ अन्दर प्रवेश नहीं करेगा (21:27)
- मृत्यु और एक शाप (3:14, 17-19)
  - कोई शाप, कोई मृत्यु, कोई आँसू नहीं (22:3)
- यीशु मसीह तथा शैतान के बीच संघर्ष (3:15)
  - शैतान का अन्तिम विनाश (20:10)
- मनुष्य का परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर निकाला जाना (3:23; 4:16)
  - मनुष्य महिमा में उसका मुँह देखेंगे (22:4)

➢ भविष्यसूचक काल्पनिक चित्रण समझने में सहायक:

- याद रखिए कि काल्पनिक चित्रण एक स्वप्न-चित्र है
- यूहन्ना अधिकांश महत्वपूर्ण चित्रणों की व्याख्या करता है
- पूरी पुस्तक में निश्चित चित्रणों पर ध्यान कीजिए
- भविष्य निरूपण को एक संपूर्ण रूप में देखिए, हमेशा हर विस्तार पर जोर न दें।

➢ पूरे प्रकाशितवाक्य में यीशु मसीह में परमेश्वर के ऐश्वर्य को देखिए

- सिंहासन शब्द का प्रयोग 44 बार हुआ है
- राजा, राज्य और शासन का प्रयोग 37 बार हुआ है
- सामर्थ तथा अधिकार लगभग 40 बार प्रयोग हुआ है

नये नियम का सर्वेक्षण: भाग 2

परमेश्वर ने हमें नया नियम क्यों दिया?

धर्मशास्त्र के रूप में नया नियम

- परमेश्वर ने हमें पुराना नियम क्यों दिया?
  - यह प्रकट करने के लिए कि किस प्रकार परमेश्वर अपने राज्य के लिए अपने लोगों को छुड़ाता है
  - परमेश्वर का राज्य...
    - लोग जो राजा द्वारा शासित है
    - एक स्थान जहाँ राजा का प्रभुत्व है
    - राजा के तथा उसके राज्य के लिए एक उद्देश्य
  - पूरे पुराने नियम में परमेश्वर अपने लोगों को अपने उद्देश्य के लिये अपने स्थान में ला रहा है।
  - प्रत्येक चीज उस दिन की ओर संकेत करती है जब परमेश्वर अपने लोगों को अपने राज्य के लिए छुटकारा देगा और संपूर्ण सृष्टि पर अपना राज्य स्थापित करेगा।
  - परन्तु पुराना नियम एक अधूरी कहानी है
- परमेश्वर ने हमें नया नियम क्यों दिया?
  - जो पुराने नियम ने आरम्भ किया उसको समाप्त करने
  - परमेश्वर अपने लोगों को अपने राज्य के लिए मसीह में छुटकारा देता है
  - परमेश्वर का राज्य...
    - यीशु मसीह उचित रूप से परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।
    - यीशु मसीह एक परिपूर्ण स्थान है जहाँ परमेश्वर की महिमा है
    - यीशु मसीह अन्ततः परमेश्वर का उद्देश्य परिपूर्ण करता है
  - वह धर्मशास्त्र के केन्द्र का राजा है
  - पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य की धीमी पड़ती हुई छाया नये नियम में यीशु मसीह के गौरवशाली वास्तविकता से प्रकाशित हुई है।
- नये नियम में परमेश्वर किस प्रकार अपने राज्य को प्रकट करता है?
  - राज्य के सुसमाचार द्वारा
  - राज्य के सुसमाचार प्रचार द्वारा
  - राज्य की आशा के द्वारा

राज्य का सुसमाचार

- **राजा आ गया**
  - पुराने नियम के लोगों का अग्रज्ञान
    - मीका 5:1-5; सपन्याह 3:14-17; जकर्याह 14:9
  - राजा का परिचय
    - वह अभिषिक्त राजा है
      मत्ती 1:1-17; 1:20; 2:1-2, 6; 9:17; 15:22; 20:29-31; 21:9, 15; 22:23
      लूका 1:26-33, रोमियों 1:3 को भी देखिए।
    - वह परमेश्वर है
      मत्ती 1:20-23; यूहन्ना 1:1-14
    - वह नया आदम है

लूका 3:23-38; रोमियों 5:12-21 भी देखें; 1 कुरि. 15:20-22, 45-49

- वह सच्चा इस्राएल है (इब्राहीम की वंशावली)
  मत्ती 2:14-15; मत्ती 4:1-11; लूका 1:54-55, 70-75; 4:1-13
- वह फसह का मेम्ना है (यूहन्ना 1:29)
- वह परमेश्वर का वचन है
  यूहन्ना 1:1-3; 14-18; मरकुस 1:14-15; प्रेरितों के काम 3:22 भी देखें; (व्यवस्थाविवरण 18:15); इफिसियों 1:8-10; कुल 2:2-3; इब्रा. 1:1-2; 2 पतरस 3:5-7
- वह मिलापवाला तम्बू है
  यूहन्ना 1:14
- वह मंदिर है
  यूहन्ना 2:13-22

➢ राजा की घोषणा

- मत्ती 4:17, 23-35; मरकुस 1:15; लूका 4:43
- 100 से ज्यादा सुसमाचारों में परमेश्वर के राज्य के लिए संदर्भ।
- "समय आ गया है..."
  सपन्याह 3:14-20; यशायाह 52:7-10
- "परमेश्वर का राज्य निकट है"
  लूका 4:14-30; 6:1-4
- "पश्चाताप करो और अच्छे समाचार पर विश्वास करो"
  मत्ती 12:41; लूका 5:32; 13:3, 5

■ **राजा विजयी हुआ है**

➢ राज्य की सामर्थ का प्रदर्शन...

- यशायाह 35:1-10; मत्ती 11:1-6
- यीशु मसीह को प्रकृति पर अधिकार है
  मरकुस 4:35-41; यूहन्ना 6:1-14, 16-21
- यीशु मसीह का रोग पर अधिकार है
  मरकुस 1:33; यूहन्ना 9:1-41
- यीशु मसीह का दुष्टात्माओं पर अधिकार है
  मत्ती 12:24-29; मरकुस 5:1-20; लूका 9:37-43
- यीशु मसीह का क्लेश पर अधिकार है
  मरकुस 5:25-34
- यीशु मसीह का पाप पर अधिकार है
  मरकुस 2:1-11
- यीशु मसीह का मृत्यु पर अधिकार है
  मरकुस 5:37-43; यूहन्ना 11:38-45

➢ राज्य की सामर्थ सन्देह में .....

- क्रूस का अप्रत्याशित शोकान्त
  मरकुस 8:31-9:1; मत्ती 27:32-56; मरकुस 15:21-41; लूका 23:26-49; यूहन्ना 19:28-37

➢ राज्य की सामर्थ घोषित...

- पुनरुत्थान की अंतत: विजय
  मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-9

■ **क्या आपने राज्य को स्वीकार किया?**

- राज्य की भेंट ग्रहण करो...
  - एक वर्तमान और एक भविष्यकाल की भेंट
    लूका 17:20-25; मत्ती 5:3-10
  - एक मुफ्त भेंट
    लूका 12:32
  - एक दयालु भेंट
    लूका 10:21
  - एक मूल्यवान भेंट
    मत्ती 13:44-46
  - एक अनंतकालीन भेंट
    मरकुस 10:17-31
- राज्य के जीवन में प्रवेश करें ...
  - राजा के प्रति एक तत्वपूर्ण मोड़
    मत्ती 3:2; 4:17; मरकुस 1:15; 10:17-31
  - राजा में तत्वपूर्ण भरोसा
    मत्ती 6:33; 18:2-4
  - विश्वास में अपरिपक्वता नहीं
  - पिता में पूर्ण और पूरा विश्वास
  - राजा के द्वारा तत्वपूर्ण रुपान्तर
  - हम राजा की शिक्षा को स्वीकार करते हैं
    मत्ती 5-7; यूहन्ना 8:31-36
  - हम राजा के चरित्र को प्रस्तुत करते हैं
    यूहन्ना 14:15-21
  - हम राजा के सामर्थ का अनुभव करते हैं
    मत्ती 10:1; मरकुस 3:14-15; लूका 10:9, 17-24; यूहन्ना 14:12
  - हम राजा के कार्य में शामिल होते हैं
    मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:45-49; यूहन्ना 20:21-23

राज्य का लक्ष्य

■ **सब कुछ राजा के नियन्त्रण में है**

- उसके पास एक योजना है
  - उसकी योजना कभी असफल नहीं होती।
  - लूका 2:49; 4:43; 9:22; 13:33; 17:25; 19:5; 22:37; 24:7, 44
  - प्रेरितों के काम 1:16, 21; 2:23; 3:12; 4:21; 9:16; 10:1-16; 13:27, 47; 14:21; 15:15-18; 17:3; 19:21; 23:11; 27:24
  - उसने क्रूस पर जाने की योजना बनाई थी
    लूका 9:51; 13:22; 17:11; 18:31; 19:28; यूहन्ना 10:18, प्रेरितों के काम 2:23; 4:27-28
  - उसने कब्र से उठने की योजना बनाई थी
    प्रेरितों के काम 2:24; 13:32-37
  - उसने अपने आत्मा को भेजने की योजना बनाई

प्रेरितों के काम 2:1-41; यहेजकेल 37:9-14; निर्गमन 19:16-22; 31:18; उत्पत्ति 11:1-9

- उसने राष्ट्रों को अपने पास लाने की योजना बनाई
  मत्ती 10:5-6; 15:24; मत्ती 28:18-20; प्रेरितों के काम 13:46-48

➢ अपनी योजना को पूर्ण करने के लिए उसके पास सामर्थ है
उसके अधिकार को रोका नहीं जा सकता
दानिय्येल 7:13-14; मत्ती 28:18-20; प्रेरितों के काम 7:54-8:4 - प्रेरितों के काम 11:19-21

- उसके वचन को रोका नहीं जा सकता
  प्रेरितों के काम 4:29-31; 6:7; 8:4, 14, 25; 10:44; 11:1; 12:24; 13:7, 44, 46, 48, 49; 14:25; 15:35; 16:32; 17:13; 18:9-11; 19:10, 20; 20:32
- कुछ भी उसकी योजना को पूरा होने से रोक नहीं सकता
  प्रेरितों के काम 28:30-31

➢ प्रश्न केवल यह है: क्या कलीसिया अपने राजा की योजना में सम्मिलत होगी?
प्रेरितों के काम 11:1-3, 15

■ **राजा का एक नया समुदाय है–**

➢ कलीसिया के द्वारा वह अपने राज्य को विस्तारित करता है

- यीशु मसीह की दया के द्वारा बुलाये गये
  1 पतरस 2:4-10; कुलु. 1:24-27; प्रेरितों के काम 14:27
- यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा जुड़े हुए
  रोमियों 4:16-25; गलातियों 3:6-8, 26-29; कुलु. 3:11; इब्रानियों 11 (11:26)
- यीशु मसीह के आत्मा से परिपूर्ण
  1 कुरु. 12:12-13; इफीसियों 1:13-14

➢ वह कलीसिया में अपने राज्य को व्यक्त करता है

- कलीसिया यीशु मसीह के देह में समाविष्ठ है
  इफिसियों 2:16; 3:6; 4:4, 12, 16, 25; 5:23, 30; कुलु. 1:18, 24
- कलीसिया यीशु मसीह के अधिकार से पूर्ण है
  मत्ती 10:8 - लूका 10:9 - प्रेरितों के काम 3:1-10; प्रेरितों के काम 1:8; 19:13-17; 1 कुरि. 3:21-23; इफिसियों 1:15-23
- कलीसिया यीशु मसीह के प्रेम को प्रस्तुत करती है
  इफिसियों 4:2, 15, 16; याकूब 2:14-18; 1 पतरस 4:7-11; 1 यूहन्ना 3:16-18
- कलीसिया यीशु मसीह के क्लेश को पूर्ण करती है
  फिलिप्पियों 1:27-30; कुलु. 1:24-27
- कलीसिया यीशु मसीह की महिमा को दर्शाती है
  1 कुरु. 3:16-17; 2 कुरि. 6:16; इफिसियों 1:22-23; 2:19-22
  1 राजा 8:41-43; यशायाह 2:1-4; 56:6-8; जकर्याह 8:20-23 देखें

➢ वह कलीसिया को राज्य सौंपता है–

- कलीसिया को सुसमाचार को सुरक्षित रखना है
  1 कुरि. 1:18-31; गलातियों 1:6-9; 2 तीमुथियुस 1:13-14
- कलीसिया को सुसमाचार की घोषणा करना है
  प्रेरितों के काम 1:8; 2 कुरि. 4:4-6; 2 तीमुथियुस 3:14-4:5

■ **क्या आप राज्य को आगे बढ़ा रहे हैं?**

➢ नये नियम की कलीसिया और मिशन...

- मिशन के कार्य के लिये कलीसिया उत्पन्न हुई
  प्रेरितों के काम 2:1-41
- मिशन के कार्य की पूर्णता के लिए कलीसिया अस्तित्व में है
  मत्ती 24:14; रोमियों 10:12-15; 1 कुरि. 9:24-27
- मिशन के कार्य के निमित्त कलीसिया मरती है
  प्रेरितों के काम 1:8; 5:41-42; 7:54-60; 12:1-4; 1 कुरि. 4:9-13; 2 कुरि. 11:23-28; 4:7-12; गलातियों 6:12-14

➢ समकालीन कलीसिया तथा मिशन...
- यदि हम नये नियम की कलीसिया में मिशन को मध्य नज़र न रखते हुए पढ़ेंगे तो उसके मुख्य सार को खो देंगे।
  फिलिप्पयों 1:6
- नये नियम की कलीसिया ने परमेश्वर के राज्य का विस्तार किया, हम कौन से राज्य का विस्तार कर रहे हैं?
  प्रेरितों के काम 8:12; 19:8; 20:25; 28:23, 31
- राज्य हमारे लिये अस्तित्व में नहीं है, हम राज्य के लिए अस्तित्व में है
  गलातियों 1:15-16
- अगर हम वास्तव में नये नियम की मसीहियत को जीना चाहते हैं, तो इस मिशन के लिए जोखिम में डालना होगा।
  प्रेरितों के काम- यहूदा; 2 तीमु. 3:12; प्रका. 6:9-11

राज्य की आशा

■ राजा वापस आ रहा है

➢ राज्य में यीशु मसीह का कार्य...
- सुसमाचार हमारे लिए यीशु मसीह के कार्य की पूर्णता दर्शाते हैं।
  - इब्रानियों 9:24-28
- प्रेरितों के काम तथा पत्रियाँ हमारे अन्दर यीशु मसीह के कार्य की निरन्तरता को दर्शाते हैं। 1 प्रेरितों के काम 1:1-6; कुलु. 1:27
- प्रकाशितवाक्य यीशु मसीह के कार्य की समाप्ति को हमारे साथ दर्शाता है
  1 थिस्स. 4:16-18; प्रका. 1:4-8

➢ राजा जो आ रहा है...
- वह मेम्ने की तरह आया (प्रका. 5:6, 12; 13:8; 12:11)
  वह निर्बलता में आया
  वह निर्धनता में आया
  वह नम्रता में आया
- वह सिंह की तरह आयेगा (प्रका. 5:5)
  वह सामर्थ में आयेगा
  वह स्वर्ग की धरोहर के साथ आयेगा
  वह महिमा में आयेगा

➢ वह है...
- सच्ची गवाही और पृथ्वी के राजाओं पर शासक है (प्रकाशितवाक्य 1:5)
- अल्फा और ओमेगा (प्रकाशितवाक्य 1:8; 22:13)
- प्रथम तथा अन्तिम (प्रकाशितवाक्य 1:17)

- वह जीवित है (प्रकाशितवाक्य 1:18)
- परमेश्वर का पुत्र (प्रकाशितवाक्य 2:18)
- पवित्र तथा सच्चा (प्रकाशितवाक्य 3:7)
- आमीन, निष्ठावान तथा सच्ची गवाही, परमेश्वर की सृष्टि का आरम्भ (प्रकाशितवाक्य 3:14)
- विश्वासयोग्य तथा सच्चा (प्रकाशितवाक्य 19:11)
- परमेश्वर का वचन (प्रकाशितवाक्य 19:13)
- राजाओं का राजा, प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशितवाक्य 19:16)
- दाऊद का मूल और वंश है (प्रकाशितवाक्य 22:16)
- चमकता हुआ भोर का तारा (प्रकाशितवाक्य 22:16)
- प्रभु यीशु मसीह (प्रकाशितवाक्य 22:21)

➢ राजा लायेगा...
- उन लोगों के लिए जिन्होंने राज्य को स्वीकार किया है
  अन्तिम छुटकारा (प्रकाशितवाक्य 19:1-10)
- उन लोगों के लिए जिन्होंने राज्य का तिरस्कार किया है
  अन्तिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)

■ राजा एक शाश्वत उत्सव का अतिथेय करेगा...

➢ राज्य का एक चित्रण...
- अवर्णनीय सुन्दरता
  एक नयी सृष्टि
  प्रकाशितवाक्य 21:1
  एक नया यरूशलेम
  प्रकाशितवाक्य 21:2
  एक नया मंदिर
  प्रकाशितवाक्य 21:3, 22
  एक नया क्रम
  प्रकाशितवाक्य 21:4-5
- अकथनीय आनंद
  प्रकाशितवाक्य 21:6
  यह परिपूर्ण है
  यह मुफ्त है
- अनिवर्त्य न्याय
  प्रकाशितवाक्य 21:7-8
  शाश्वत पुत्र
  चिरस्थायी अलगाव (प्रकाशिवाक्य 20:11-15)

➢ राज्य की प्रतिज्ञा...
- यीशु मसीह का दावा: "मैं शीघ्र आने वाला हूँ" (22:7, 12, 20)
- कलीसिया की पुकार: आमीन, हे प्रभु यीशु आ!"

■ **क्या आप राज्य की प्रत्याशा कर रहे हैं?**

➢ हम उसके प्रकट होने की राह देखते हैं
- इस संसार की अस्थाई प्रवृत्ति को देखें

शीघ्र ही, पाप नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 20:7-10; 21:4)
शीघ्र ही, दु:ख नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 21:4; रोमियों 8:18-25)
शीघ्र ही, बीमारी नहीं होगी (प्रकाशितवाक्य 21:4; 1 कुरि. 15:50-57)
शीघ्र ही, अलगाव नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 21:4; रोमियों 8:38-39)

- जब तक वह वापिस आता है हमारे कार्य के अनंतकालीन महत्व को देखें (1 थिस्स. 5:4-11; 2 थिस्स. 3:6-15)

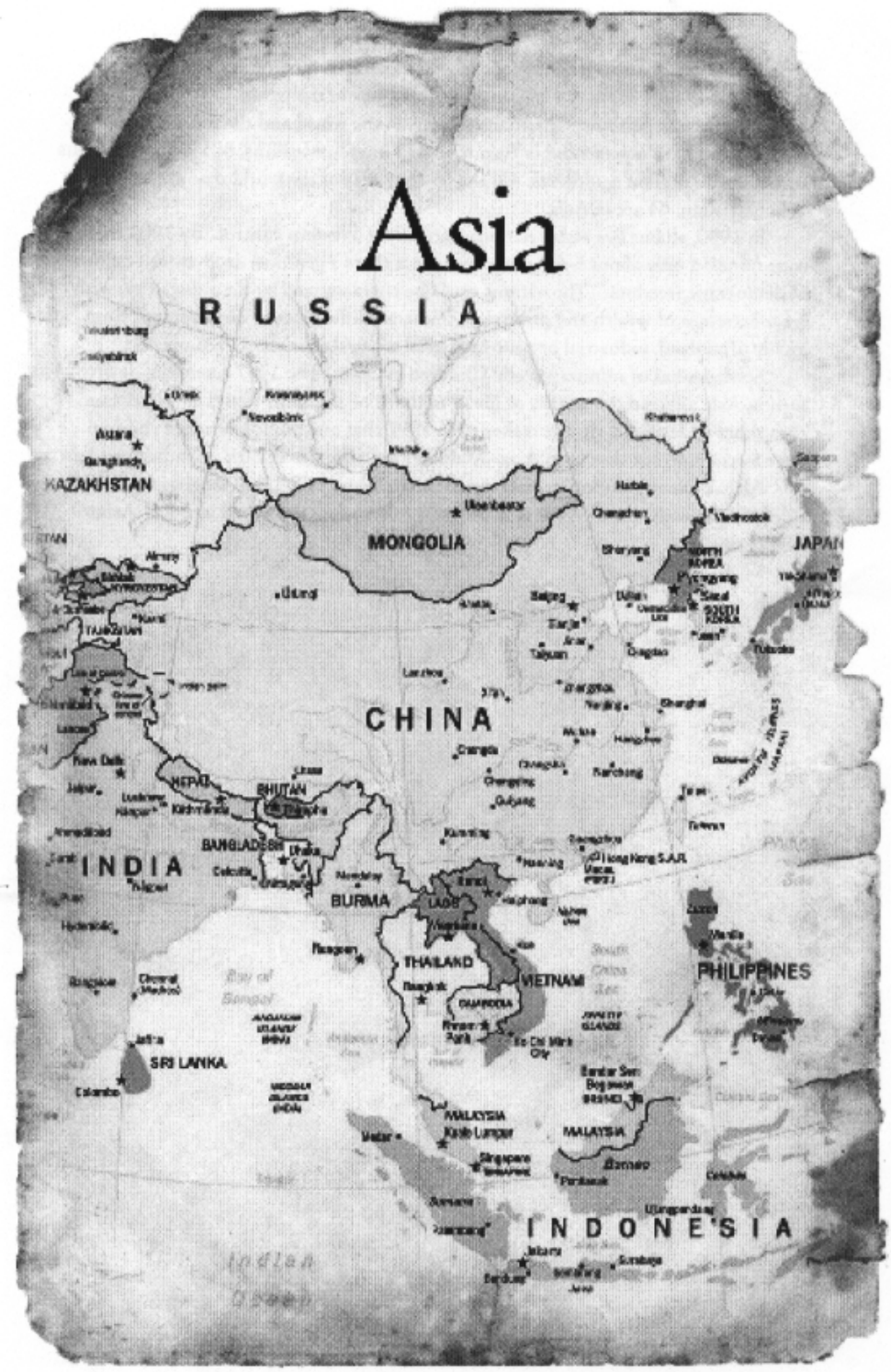
➢ हम उसके प्रकट होने के लिए जीवित हैं

- हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में पवित्रता का पीछा करना चाहिए (कुलु. 3:1-5; 1 तीमु. 6:11-16; तीतुस 2:11-14)
- हमें संसार के सब लोगों तक सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए (मत्ती 24:14; 2 तीमु. 4:1-2)

➢ हमें उसके प्रकट होने की लालसा करते हैं (2 तीमु. 4:8)

- उस दिन के लिए जब वह हमें पूर्ण रुप से बचायेगा
  रोमियों 8:28-30; 1 पतरस 1:9
- उस दिन के लिए जब हम उसका चेहरा देखेंगे
  प्रकाशितवाक्य 22:4

"स्वर्ग में बड़े-बड़े शब्द होने लगे कि
जगत का राज्य हमारे प्रभु का है
और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"
–प्रकाशितवाक्य 11:15


Asia
RUSSIA
KAZAKHSTAN
MONGOLIA
JAPAN
CHINA
INDIA
BHUTAN
BANGLADESH
BURMA
THAILAND
VIETNAM
PHILIPPINES
SRI LANKA
MALAYSIA
INDONESIA

एशिया

एशिया, संसार के धरातल का लगभग 23.5% भाग है। एशियाई, एक जाति समूह के रूप में, संसार के 4.4 बिलियन गैर-ईसाई के 83% से ज्यादा जनसंख्या से बना है।

इसाईयों के लिए संसार में सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण तथा तीन सबसे बड़े गैर-इसाई धर्मों का प्रतिनिधित्व एशिया में है जिसमें 832 मिलियन मुस्लिम, 805 मिलियन हिन्दु और 400-900 मिलियन बौद्ध धर्म के लोग हैं। संसार के 55 देशों में से जो 10% से कम इसाई धर्म के हैं, 44 एशिया में हैं।

1900 में, पाँच एशियन देशों को छोड़कर, बाकी सारे देश पश्चिमी नियन्त्रण के अधीकृत थे। 2000 तक कोई भी नहीं था। केवल पाँच-छः एशियाई देशों में ही एक वास्तविक व गहरी प्रजातान्त्रिक स्वतन्त्रता की संस्कृति है। यह राष्ट्र अपनी असमानताओं द्वारा लक्षणात्मक है। धन निर्धनताओं की महान चरम सीमाओं के साथ, उच्च शहरीकरण के औद्योगिक या पूर्व औद्योगिक विकास से ग्रामीण अर्थशास्त्र निर्वाह तक।

धर्मार्थ कार्य के विशेष क्षेत्रों की आवश्यकता: घोर संकट में बच्चे। एशिया में 1997 की अर्थव्यवस्था में गिरावट ने करोड़ों बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। बाल-श्रम बहुत अधिक फैल गया। 1997 में यह माना जाता था कि एशिया में 1 मिलियन या इससे भी अधिक बच्चों को देह व्यापार में ढकेला जाता था। भारत के 60% से ज्यादा बच्चे कुपोषण का शिकार है।

बाइबल का अनुवाद भी एक बड़ी चुनौती है– 1300 भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता है। 271 एशियाई भाषाओं में वचन के अनुवाद का कार्य प्रगतिशील है।

इन्डोनेशिया

•·जनसंख्याः	245 मिलियन	**•·जाति समूहः**	15
•·प्रमुख धर्मः	मुस्लिम	**•·भाषाएंः**	इन्डोनेशिया
•·गैर इसाईः	84%	**•·इसाईः**	16%

•·क्षेत्रफलः 1,919,317 स्कै. कि.मी., गणतन्त्र के 17,000 टापू हिन्द महासागर के 9.5 मिलियन स्कै. कि.मी. तक फैले हैं, 23 प्रान्त, 2 विशेष क्षेत्र तथा प्रमुख मंडल के साथ।

•·विवरणः 1965 के साम्यवादी हिंसक अधीकरण और इसके रक्त टंजित परिणाम ने, जिसमें 500,000 साम्यवादी समर्थक समाप्त हो गये। 1990 में उत्पीड़न के बढ़ते हुये स्तरों ने इसाईयों में एकता को और भी भड़काया है। एक नैशनल प्रेयर मूवमैन्ट की वृद्धि और इन्डोनेशिया और उससे सुदूर विभिन्न सांस्कृतिक पहुँच के प्रति प्रतिबद्धता ने भी इसाईयों में एकता को उत्तेजित किया है। राष्ट्र के अगुवों के लिये प्रार्थना करें।

ब्रूनी

•·जनसंख्या:	379,444	**•·जाति समूह:**	8
•·प्रमुख धर्म:	मुस्लिम	**•·भाषाएं:**	माले, अंग्रेजी
•·गैर इसाई:	88.75%	**•·इसाई:**	11.25%

•·क्षेत्रफल: 5,765 स्कै. कि.मी. साटावक में दो छोटे अन्त क्षेत्र, बोसीओ के टापू पर पूर्वी मलेशिया

•·विवरण: मुस्लिम का उद्देश्य है कि 2020 तक एक अमिश्रित इस्लामिक राज्य हो। घरों तथा व्यवसायों को प्रदान करने के द्वारा, इसाईयों को अभित्रस्त करने के द्वारा जातीय तथा चीनी अल्पसंख्यकों में से एक धीमी परन्तु नियमित धर्मान्तरित गति हो रही है। इन दोनों योजनाओं को रोकने के लिए प्रार्थना करें और वैधानिक रूप से आश्वासित धार्मिक स्वतन्त्रता की बहाली के लिए प्रार्थना करें। यहाँ के राजा की प्रतिष्ठा संसार के धनाढ्य व्यक्तियों में होती है।

चीन

•·जनसंख्याः	1.3 बिलियन	**•·जाति समूहः**	12
•·प्रमुख धर्मः	चीनी	**•·भाषाएंः**	पुटौन्गुहा
•·गैर इसाईः	92.75%	**•·इसाईः**	7.25%

•·क्षेत्रफलः 9,573,000 स्कै. कि.मी. संसार का तीसरा सबसे बड़ा राज्य, और संसार के सबसे ऊँचे पर्वत तथा पठार भी है।

•·विवरणः पूरे इतिहास में, इसाईयों का विश्वास तथा वचनबद्धता सबसे अधिकतम निर्गम और व्यापक उत्पीड़न के अधीन है। उत्पीड़न ने चर्च को पवित्र तथा स्थानीय बना दिया है और इसको आने वाले और भी अधिक दमन के आवेग तथा इसको नष्ट या कमजोर करने के लिए शासन के हर प्रयासों की पीड़ा का आदि बना दिया है। 1989 में बेजिंग के टिन्नामन स्कैयर में हुए हत्याकांड का घातक परिणाम चीन के इतिहास में निर्धारक क्षण था। इस पराजय से, अपमानित संगठन अभी भी त्रस्त है। पहली बार, शहरी बुद्धि जीवों में, परमेश्वर की ओर अर्थपूर्ण रूप से लौट कर आना ही इसका परिणाम था। चीनी समाज के हर स्तर पर अब इसाई लोग मिलते हैं। इन धर्म प्रचारकों तथा चर्च को रोपित करने वालो में से अधिकांश स्त्रियाँ हैं और कई तो अभी किशोरावस्था में है। इन्टर्नेट अच्छे तथा बुरे नये असाधारण अवसर बना रहा है। अच्छे अवसर, शिष्य बनाने तथा नेतृत्व के विकास के लिए हैं।

वियतनाम

•·जनसंख्या:	84 मिलियन	**•·जाति समूह:**	2
•·प्रमुख धर्म:	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएं:**	वियतनामी
•·गैर इसाई:	91.84%	**•·इसाई:**	8.16%

•·क्षेत्रफल: 331,653 स्कै. कि.मी. इन्डोचीन की दक्षिणी तटीय रेखा को घेरे हुए एक लम्बा व पतला देश।

•·विवरण: 21वीं शताब्दि के बहुत थोड़े साम्यवाद राष्ट्रों में से एक, वियतनाम को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हर प्रकार की स्वतन्त्रता का दमन जारी है, और ठीक इसके साथ ही सामाजिक कुरीतियां भी बढ़ रही हैं। नशीली दवाओं का व्यसन, एड्स, देह-व्यापार और बच्चों का शोषण बहुत ही सामान्य है। एक सजीव जन्म के पीछे गर्भपात होते हैं, संसार की उच्च दरों में से एक। प्रार्थना करें कि सुसमाचार के प्रचार के प्रकाश द्वारा इस राष्ट्र का नैतिक तथा विचार पद्धति का अन्धकार दूर हो। वियतनाम इसाईयों का सबसे बुरा उत्पीड़क है। कहीं पर भी साम्यवाद की समाप्ति में इसाई धर्म की भूमिका को देखकर, शासन ने विश्वासियों को नियन्त्रित किया है या नष्ट करने का प्रयास किया है। चर्च जैसे-जैसे उत्पीड़न की प्रतिक्रिया वृद्धि तथा पहुँच द्वारा करते हैं, वैसे-वैसे शासकीय प्रयास भी तीव्र होते जाते हैं। पंजीकरण कराने का तात्पर्य समझौता है, चर्चों को पंजीकृत कराने में विफलता गैर कानूनी है जो अधिकतर विश्वासियों को भूमिगत होने के लिए विवश करता है। जो लोग बन्दीगृह में है, उनके विश्वास के लिए प्रार्थना करें। एक समय में सम्भवत: दर्जनों इसाई नेतृत्व-कर्ता कैदी थे।

•·उत्पीड़न: विश्वासियों को त्रस्त किया जाता है, पीटा जाता है और गैर कानूनी रूप से प्रचार करने या प्रचार की गतिविधियों को संगठित करने के लिए कारावास दिया जाता है। अपंजीकृत और प्रजातीय अल्प-संख्यक चर्चों के लिए उत्पीड़न विशेषकर कठोर होता है। साम्यवाद की समाप्ति में, इसाई धर्म की भूमिका को मध्यनज़र रखते हुए, शासन विश्वासियों पर नियन्त्रण रखता है या उन्हें समाप्त करने का प्रयास करता है। जैसे-जैसे उत्पीड़न के प्रति चर्चों की प्रतिक्रिया वृद्धि तथा पहुंच द्वारा होती है, वैसे-वैसे ही शासकीय प्रयास भी तीव्र हो जाते हैं। चर्चों का पंजीकरण विश्वासियों के लिए एक समझौते के रूप में है। पंजीकरण में विफलता शासन की दृष्टि में गैर कानूनी है जो चर्च को भूमिगत होने पर विवश करती है।

मालदीव्ज

•·जनसंख्या:	359,008	**•·जाति समूह:**	2
•·प्रमुख धर्म:	मुस्लिम	**•·भाषाएं:**	धीवेही
•·गैर इसाई:	99.9%	**•·इसाई:**	.1%

•·क्षेत्रफल: 298 स्कै. कि.मी., हिन्द महासागर में श्रीलंका ने 600 कि.मी. दक्षिण पश्चिम की ओर 19 प्रशासनिक समूहों में 1,200 मूँगे के टापू हैं।

•·विवरण: विश्वीय तापन, समुद्र को बढ़ते हुये जल स्तर द्वारा, जो इन टापूओं को नष्ट कर सकते हैं या उनको जलमग्न कर सकते हैं, इन टापूओं के जीवन को संकट में डाल देता है। मूंगों के खनन और एल नीनों के कारण हुये समुद्र के तापमान में चढ़ाव ने मूंगों को नष्ट कर दिया है जो इन टापूओं की नींव है। प्रार्थना करें कि यह प्रलयकारी चुनौती लोगों के लिए एक ध्यान रखने वाले परमेश्वर, जिसने यीशु मसीह को भेजा है, को ढूँढने का कारण बन सके। 1998 में अधिकारियों द्वारा एक कड़ी कार्यवाही का परिणाम 50 मालडीवियन की कैद तथा यातना थी, जिन पर इसाई होने का शक था। 19 इसाई प्रवासी को निकाल दिया गया। उन्होंने बहिष्कार, बेरोजगारी का सामना किया और वह खुले आम न तो मिल सकते हैं और न ही धर्मशास्त्र को पढ़ सकते हैं। प्रार्थना करें कि उनका विश्वास सशक्त हो और उनके जीवन द्वारा दूसरों तक यीशु मसीह की सुन्दरता फैलायी जाये। ओर यह भी प्रार्थना करें कि अधिकारियों का अक्खड़ पन तथा अहंकार कई लोगों को, जो वह विश्वास करते हैं, उसका तानाशाही आरोपण के बारे में सवाल-जवाब के लिये उकसाये।

•·उत्पीड़न: गैर-मुस्लिम धर्मों या प्रकाशन के लिए स्वतन्त्र भाषा का कोई सत्कार नहीं है। मालदीव्ज के बसे हुये क्षेत्रों में बाहर के लोगों को बहुत कम समय के लिए ही रहने की अनुमति है। ताकि मुस्लिम समुदायों पर उनका प्रभाव कम से कम हो। 1998 में हर ज्ञात इसाई को देश से निकाल दिया गया था, और हर ज्ञात मालदीव्ज इसाई को बन्दी बना लिया गया था। वर्ष के अन्त में, अन्तर्राष्ट्रीय प्रार्थना तथा विरोध से उनको छोड़ दिया गया था।

मिनदानाओ (फिलीपीन्स)

•·जनसंख्याः	89 मिलियन	**•·जाति समूहः**	19
•·प्रमुख धर्मः	इसाई	**•·भाषाएंः**	फिलिप्पियों
•·गैर इसाईः	6.81%	**•·इसाईः**	93.19%

•·क्षेत्रफलः 300,000 स्कै. कि.मी., 80 प्रान्त, 7250 टापू जिनमें से 700 बसे हुये हैं।

•·विवरणः प्राकृतिक सम्पदा में समृद्ध होने तथा एक अच्छी शिक्षित जनसंख्या होने के बावजूद भी इस देश की महान सामर्थ्य को सिद्धि नहीं मिली है। उत्तरोत्तर शासनों द्वारा गम्भीर, आर्थिक तथा सामाजिक विषयों से निपटने में विफलता के कारण विकास को अवरुद्ध किया है और आधी जनसंख्या को निर्धनता में रखा है। इस देश का मुख्य आयात लोग (मनुष्य) हैं। फिलिपिनोस योग्यताओं में समृद्ध है पर काम करने के अवसर बहुत ही कम हैं। अनुमान लगाया जाता है कि एशियन, मिडिल ईस्टर्न तथा पश्चिमी देशो में 6.5 मिलियन से ज्यादा परिचारिका, इन्जीनियर, नाविक, घरेलू कार्य-कर्ता, आया, और छोटा काम करने वाले नौकर हैं। कई लोग दूसरे निष्ठुर तथा कठिन प्रदेशों में यीशु मसीह के गवाह बनने के लिए चले गये हैं, और कुछ लोगों ने सुसमाचार के लिए कष्ट भी उठाये हैं। सभी इसाइयों के लिए प्रार्थना करें कि वह यीशु मसीह के लिए चमक सकें। कृपया जो लोग अभी नहीं बदले हैं, उनके लिए भी प्रार्थना करें कि वह सुसमाचार को सुनें, विशेषकर 244,000 फिलिपिनों नाबिकों के लिए प्रार्थना करें जो संसार में चारों ओर बिखर गये हैं (किसी भी राज्य के लिए यह बहुत बड़ी संख्या है)।

भारत

•·जनसंख्या:	1 बिलियन	**•·जाति समूह:**	4,635
•·प्रमुख धर्म:	हिन्दू	**•·भाषाएं:**	हिन्दी
•·गैर इसाई:	97.60%	**•·इसाई:**	2.40%

•·क्षेत्रफल: 3,166,000 स्कै. कि.मी., कश्मीर का 121,000 स्कै. कि.मी. पाकिस्तान तथा चीन द्वारा संचालित है।

•·विवरण: भारत में, प्रेरित थामस के आगमन से, मसीहियत के दो सहस्राब्दी के लिए परमेश्वर की महिमा हो। पिछले 20 वर्षों में, इसाई धर्म की उपस्थिति, संसार के सभी मुख्य इसाई प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करते हुये, अंतत: भारतीय जीवन की मुख्य विचारधारा का एक स्थानीय भाग के रूप में स्पष्ट हो गई है। 1990 में हुये उत्पीड़न ने चर्च को सुसंस्कृत कर दिया, इसकी दूरदर्शिता केन्द्रित कर दी है और पहले से अधिक, उद्देश्य की एकता हुई है। इसने यीशु मसीह के व्यक्तित्व तथा चर्च के अस्तित्व को अहम स्थान दिया है, और चरमपंथी हिन्दुत्व को एक अनुकूल स्थिति में नहीं दर्शाया है।

•·उत्पीड़न: उड़ीसा तथा गुजरात राज्यों में इसाई। 2005 में, वर्ष के आरम्भिक चार महीनों में इसाईयों के विरुद्ध 200 से अधिक हिंसक घटनाएँ हुईं। कई पादरी तथा धर्म प्रचारकों की हत्या कर दी गई, कोटा में सेमिनरी को स्नातक समारोह के लिए आने वाले इसाईयों को अतिवादियों ने बहुत क्रूरता से मारा। मई 2004 में, तमिलनाडु के राज्य में एक धर्मांतरित विरोधी कानून, कांग्रेस-पार्टी को चुनावी जीत के बाद रद्द कर दिया गया था। पाँच भारतीय राज्यों में अभी भी यह कानून पुस्तकों में है। यह किसी के भी विरुद्ध, जो भारतीयों का दबाव, धोखे के लालच द्वारा धर्म-परिवर्तन करता है, उन पर तगड़ा या कैद की सजा आरोपित करता है। इसाई लोग कहते हैं कि उनकी बिमारों की सेवा करने का तथा जरूरतमन्दों की सेवा करने के कार्य को धमकी दी जाती है क्योंकि धर्मांतरित विरोधी कानून को दबाव तथा लालच वाली परिभाषाएँ बहुत व्यापक हैं। इस कानून के अनुसार, कोई भी भेंट या भौतिक हितकारी वस्तु जो इसाई धर्मांतरित व्यक्तियों द्वारा की जाती है, उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन समझा जा सकता है।

भूटान

•·जनसंख्याः	2.2 मिलियन	**•·जाति समूहः**	11
•·प्रमुख धर्मः	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएंः**	जौन्गखा
•·गैर इसाईः	99.54%	**•·इसाईः**	0.46%

•·क्षेत्रफलः 47,000 स्के. कि.मी. पूर्वी हिमालय पर्वतों में एक छोटा राज्य

•·विवरणः भूटान, इसाई धर्म से प्रभावित सबसे कम देशों में से एक देश है। शासन की शक्तिशाली अलगाव-वादी योजनाएँ, तांत्रिक बौद्ध धर्म का समर्थन करती है जो अधिकतर दुष्टात्मा-विषयक है। इस दैत्य (डुक यूल) के देश की सच्ची आत्मिक स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना करें। 1965 तक सभी इसाई गवाहों के लिए भूटान अवरुद्ध था। फिर 25 वर्षों को थोड़ीसी शिथिलता आई जिसमें भारतीय तथा दूसरे प्रवासी, एन. जी. ओ. द्वारा गवाही देने योग्य हुए। 1990 में सीमाएँ बढ़ गई थी– इसका कारण उन गवाहियों की सफलता थी, विशेषकर नेपालियों के बीच में। अब तो कानूनी तौर पर अनुमति प्राप्त कुछ सभाएं हैं जिनके पास अपनी इमारते हैं। इस देश में चर्च की वृद्धि के लिए प्रार्थना करें। डुक्पा बहुसंख्यक बहुत सशक्त बौद्ध धार्मिक हैं। और उनके बीच में इसाई केवल कुछ एक ही हैं। अधिकांश विश्वासी अलग-थलग हैं और बिखरे हुये हैं, सहभागिता के अवसर बहुत कम हैं और कुछ न तो अपने विश्वास के लिए कष्ट भी उठाये हैं। भूटान के प्रत्येक जातीय समूह में एक सजीव गवाही की सहभागिता के उत्पन्न होने के लिये प्रार्थना करें।

•·उत्पीड़नः 1965 के बाद, दो दशकों से ज्यादा समय के लिये देश गृहणशील था, जब तक मसीहियत ने प्रगति करना शुरु कर दिया था। एक नये नियामक वातावरण ने पकड़ बना ली थी, और मानवीय परियोजनाओं में धार्मिक संस्थाओं को कार्य करने की अनुमति थी, पर वह धर्म का प्रचार नहीं कर सकती थी। कुछ संस्था तो समाप्त कर दी गई है, जब से भूटान की सबसे बड़ी समस्या– कोढ़ लगभग समाप्त हुआ है। गैर-बौद्ध धर्म के लोगों के लिए हर सार्वजनिक आराधना तथा प्रचार, भूटान में गैर कानूनी है। जब भूटानी इसाई धर्म में रूपान्तरित होने पर खोज लिये जाते हैं, तब उन्हें शासकीय हित अस्वीकार हो जाता है– जिसमें सार्वजनिक शिक्षा शामिल है। इसाई शासकीय कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया गया है, और दूसरों को देश से निकाल दिया गया है।

मयनमार (बर्मा)

•·**जनसंख्याः**	47 मिलियन	•·**जाति समूहः**	25
•·**प्रमुख धर्मः**	बौद्ध धर्म	•·**भाषाएंः**	बर्मी
•·**गैर इसाईः**	91.30%	•·**इसाईः**	8.70%

•·**क्षेत्रफलः** 676,577 स्कै. कि.मी., इरावादी नदी का डेल्टा तथा घाटी जो ऊँचे पर्वतों से घिरा हुआ है जो इस देश को भारत, चीन और थायलैण्ड से पृथक करता है।

•·**विवरणः** दमनकारी सैन्य शासन के दस दशकों ने इस राष्ट्र को पृथक कर दिया है और इसका विनाश किया है। 1990 में प्रजातन्त्र के दमन ने निराशा को व्यापक रूप से फैला दिया। मुख्य विरोधी दल के नेता औंग सैन सू कियू के साहस को मान्यता दी गई और 1991 में उसे नोबेल पीस प्राइज मिला। 1990 से वह नजरबन्द है। एक ऐसे न्यायशील प्रजातन्त्र शासन को विधिपूर्वक हस्तांतरित करने के लिये प्रार्थना करें जो इस देश का पुनः निर्माण प्रजातान्त्रीय तथा धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ कर सके। सैन्य शासन चर्च को अधिकारहीन करने और समाप्त करने का यत्न कर रहा है। पर फिर भी विकास-वादी है। प्रतिकूल परिस्थितियों में मसीहियत अधिक सशक्त हो गई है और गहराई से जम गई है। कई इसाई सुशिक्षित है और पूरे देश में जिम्मेदार पदों पर हैं। फिर भी 1980 में विकास थोड़ा धीमा पड़ गया था जिसका कारण उदार आध्यात्म-विद्या थी। नये सम्प्रदायों में विकास अब अधिक उल्लेखनीय है। कृपया प्रार्थना करें कि वह अपनी जाति समूह में प्रत्येक उप समूह को प्रचार का कार्य जारी रखें और दूसरे उन लोगों तक और बर्मी बहुसंख्यक पहुँचे जिन तक पहुँचना कठिन है।

•·**उत्पीड़नः** स्टेट पीस एण्ड डैविलपमैन्ट सोसाइटी (एस. पी. डी. सी.) हर धार्मिक गतिविधि को निमन्त्रित करने का प्रयास करती है। 1966 में लगभग सभी इसाई धार्मिक संस्थाएं निकाल दी गई थीं। प्रजातीय इसाईयों को दामन के लिए अक्सर पृथक किया जाता है। सैद्धान्ति रूप से धार्मिक स्वतंत्रता है, पर क्योंकि इसाईयत प्रजातीय अल्प-संख्यकों में बहुत सशक्त है (उत्तरीय चिन समूह, लिस और कटेन) इसलिए इसाईयों के विरुद्ध बहुत पक्षपात है।

बंगलादेश

•·जनसंख्याः	147 मिलियन	**•·जाति समूहः**	41
•·प्रमुख धर्मः	मुस्लिम	**•·भाषाएंः**	बंगला
•·गैर इसाईः	99.28%	**•·इसाईः**	.72%

•·क्षेत्रफलः 173,998 स्कै. कि.मी., गंगा तथा ब्रहमपुत्र नदियों के जलमय मैदानी भाग तथा डेल्टा, बहुत अधिक वर्षा तथा बाढ़ वाले क्षेत्र।

•·विवरणः राष्ट्र के अच्छे, निष्ठावान तथा निष्पक्ष नेतृत्व के बिना उत्तरोत्तर बढ़ती हुई निर्धनता तथा कष्टों को विपरीत दिशा में मोड़ा नहीं जा सकता। अधिकतर लोग अशिक्षित हैं, कुपोषण का शिकार हैं और उनके पास पर्याप्त चिकित्सीय सेवायें नहीं हैं। धार्मिक, सामाजिक तथा प्रजातीय क्षेत्रों में कार्य कर रही अन्धकार की शक्तियों को बान्धने के लिए प्रार्थना करें। सभी के लिए संवैधानिक स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना करें ताकि सब लोग अपने धर्मों का अभ्यास कर सकें और उसके प्रचार को कायम रख सकें।

मलेशिया

•·जनसंख्याः	24 मिलियन	**•·जाति समूहः**	3
•·प्रमुख धर्मः	मुस्लिम	**•·भाषाएंः**	माले
•·गैर इसाईः	90.79%	**•·इसाईः**	9.21%

•·क्षेत्रफलः 330,434 स्कै. कि.मी. दो स्पष्ट भागः मुख्य एशिया के क्रा प्रायद्वीप पश्चिमी मलेशिया, और साटावक तथा सबाह राज्य क्षेत्रों से मिलकर बना हुआ, बोटनिओं के उत्तरीय दिशा में तीसरा टापू पूर्वीय मलेशिया।

श्री लंका

•·**जनसंख्याः**	20 मिलियन	•·**जाति समूहः**	9
•·**प्रमुख धर्मः**	बौद्ध धर्म	•·**भाषाएंः**	सिन्हला
•·**गैर इसाईः**	92.38%	•·**इसाईः**	7.62%

•·**क्षेत्रफलः** 65,610 स्कै. कि.मी., भारतवर्ष के 80 कि.मी. दक्षिण पूर्व की ओर एक बड़ा टापू

•·**विवरणः** कुछ लोगों का यह दावा करना कि श्रीलंका अदन की वाटिका का स्थल है, यह देश अब आंसुओं का टापू है। तमिलयनों तथा सिन्हालीयों के बीच के घृणित संघर्ष से भारी वेदना हुई है– अनुमान किया जाता है कि 100,000 व्यक्ति मारे गये हैं, 800,000, श्री लंकन्स (मुख्यतः तमिल) भारत को या पश्चिम को उत्प्रवास कर गये या भाग गये, और 700,000 और 1.5 मिलियन के बीच की संख्या में, श्री लंका में विस्थापित हो गये हैं। बौद्ध धर्मियों ने अपने अहिंसक धर्म तथा सहनशीलता पर लम्बे समय से गर्व किया है। बौद्ध धार्मिक उग्रवादियों की कट्टरता तथा हिंसा जो उन्होंने हिन्दु तमिल और इसाईयों के विरुद्ध दिखाई है, उनकी छवि को ध्वस्त कर दिया है। बौद्धिक धर्म तथा हिन्दू धर्म, दोनों में ही सर्वव्यापक भ्रांति मुक्ति है जिसने, समाजिक हानियों और उत्पीड़न की धमकियों के बावजूद भी, कई लोगों को यीशु मसीह के दावों को सोचने का कारण दिया है। कृपया प्रार्थना करें कि अधिकांश लोग उसमें शांति पायें।

•·**उत्पीड़नः** यद्यपि दूसरे धर्मों के लिए स्वतन्त्रता का आश्वासन है, पर इस स्वतन्त्रता का, कर, शिक्षा तथा व्यवसाय के द्वारा अल्प-संख्यक धर्मों के विरुद्ध पक्षपात से, नियमित विनाश हुआ है। कई श्रीलंका निवासी इसाई धर्म को एक विदेशी धर्म के रूप में देखते हैं और एक उपनिवेशीय आरोपण मानते हैं। 2003 से 2005 तक, 170 हिंसक घटनायें, इसाईयों या उनके संगठनों के विरुद्ध रिकार्ड करी गई है। 2005 में, बौद्धिक धार्मिक नेताओं ने तथा वकीलों ने, सुप्रीम कोर्ट के द्वारा, एक धर्मांतरित विरोधी कानून को लागू कराने के लिए, सभी प्रयासों का अक्रामकता से अनुसरण किया।

लाओस

•·जनसंख्या:	6 मिलियन	**•·जाति समूह:**	138
•·प्रमुख धर्म:	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएं:**	लाओ
•·गैर इसाई:	98.15%	**•·इसाई:**	1.85%

•·क्षेत्रफल: 236,8000 स्कै. कि.मी., पतला अवरुद्ध शहर मुख्यत: थाइलैण्ड और वियतनाम के बीच।

•·विवरण: साम्यवाद के अधिकार में आने के बाद से चर्च ने बहुत कष्टों का सामना किया है। इसाईयत धर्म को "एक झूठा धर्म" का चिन्ह दे दिया गया है जो लाओ प्रथाओं का उल्लंघन करता है और इसे राज्य का नम्बर एक शत्रु घोषित किया गया है। वियतनाम में शासकीय गुप्तचर चर्चों में घुस चुके हैं, और पिछले कुछ वर्षों में विश्वासियों का उत्पीड़न तथा दासत्व बहुत बढ़ गया है। 2000 में कुछ विश्वासियों के कारावास की 24 घटनाएं थीं। फिर भी चर्च वृद्धि कर रहा है और फैलता जा रहा है। अभी हाल ही में, 200 लाओवादियों को एक गृह-चर्च के प्रतिरूप में, चर्च स्थापना तथा नेतृत्व करने का प्रशिक्षण दिया गया था। प्रार्थना करें कि यह विधियां, रेडियो तथा टी ई ई से पूरित होकर, नेतृत्व कर्त्ताओं को अपने कार्य के लिए पूर्णतया समर्थ बना सकें। इसाई धर्म के कार्य को शासकीय रूप से अनुमति नहीं है। परन्तु कई प्रवासी विश्वासी कृषिक विकासों के क्षेत्रों से लेकर, वियतनाम युद्ध के समय डाले गये कृषिक विकासों के क्षेत्रों से लेकर, वियतनाम युद्ध के समय डाले गये अमेरिकी बमों को निकालने के काम में सहायता कर रहे हैं। अवसर तो कई हैं, परन्तु सरकार, लाओस की महान आवश्यकता और इसके स्वावलम्बन होने की इच्छा के बीच अनिश्चितता में फंसी रहती है। बाइबल अनुवादकों के लिये, मुख्य चर्च स्थापना करने वालों के लिए और बाइबल शिक्षकों के लिए प्रार्थना करें– आत्मिक सेवा कार्य की सबसे अधिक आवश्यकता है।

•·उत्पीड़न: वियतनाम की मुख्य शहर में तीन या चार चर्चों को क्रांतिकारी माना जाता है और शासन द्वारा उनका ध्यान-पूर्वक निरीक्षण होता है। घरों में हो रही चर्च सभाओं पर आक्रमण होते हैं। लाओ इसाईयों को कैद किया जाता है, जबकि विदेशी इसाईयों को निर्वासित किया जाता है। कई जिलों में साम्यवाद नेताओं ने "न्यू मैकेनीज्म" नामक एक योजना को लागू किया है, जिसके अनुसार कोई भी जो बौद्ध धर्म में धर्मांतरित नहीं होता, उन्हें बल-पूर्वक अपने जिलों से हटा दिया जाता है। इसाई गांव वालों को भी अपना विश्वास छोड़ने के लिये एक पत्र पर बल-पूर्वक हस्ताक्षर करवाया गया। अगर वह मना करते हैं, तो उन्हें घर छोड़ने को विवश किया जाता है और उनकी सम्पत्ति या तो छीन ली जाती है या नष्ट कर दी जाती है।

उत्तरी कोरिया

•·जनसंख्या:	23 मिलियन	**•·जाति समूह:**	2
•·प्रमुख धर्म:	प्रजातीय	**•·भाषाएं:**	कोरियन
•·गैर इसाई:	98.31%	**•·इसाई:**	1.69%

•·क्षेत्रफल: 122,370 स्कै. कि.मी., कोरियाई प्रायद्वीप का बड़ा भाग, पर दक्षिण की तुलना में जलवायु अधिक कठोर है।

•·विवरण: उत्तरीय कोरिया के नेता ने, प्रशंसात्मक दुवप्रचार, मूर्तियों की स्थापना और शासकीय प्रचलित योजनाओं द्वारा अपने मृत पिता किम 2 सूंग का अपमान किया है। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा उसको तथा उसके संगठन को दोषी ठहराये और वे अपनी मूर्तिपूजा को बन्द करके सच्चे परमेश्वर की आराधना करें। अधिकतर लोगों ने यीशु मसीह का नाम तक नहीं सुना है। परमेश्वर का इस अधिकांश लोगों के लिए, दमन का एक औरवेलियन भयानक अनुभव, पूर्ण अनुरूप आचरण और बाह्य संसार से पृथकता द्वारा, मिटा दिया गया है। जब राज्य का पतन होगा, तब परमेश्वर की ओर मुड़ कर आना उत्तेजक हो सकता है। 1994-2000 तक 3 मिलियन भूखमरी से मर गये, फिर भी शासन सैन्यों के लिए भोजन-सामग्री बड़ी मात्रा में संचित करके रखता है और कठोर शर्तों के अलावा किसी भी आधार पर सहायता के लिए मना कर देता है। वन काटने से हुये बाद के प्रकोप से फसलों का नष्ट होना जारी है और नरभक्षित का वर्णन देश से बाहर जा रहा है। कुछ इसाई संस्थाओं ने सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, पर सुसमाचार को बांटने की अनुमति के साथ नहीं। कृपया उत्तरीय कोरिया के इसाईयों के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने वर्षों से प्रार्थना करी और उस समय के लिए तैयारी करी जब यह देश सुसमाचार को ग्रहण कर सकेगा।

•·उत्पीड़न: सभी धर्मों का कठोर दमन हुआ है। कोरियन युद्ध के समय से कई हजारों इसाइयों की हत्या कर दी गई। 1953 में लगभग 300,000 इसाई थे, पर आज यह संख्या घट कर केवल कुछ हजार ही रह गई है। इसाई अपने विश्वास का अभ्यास गुप्त रूप से ही करते हैं और वे लगातार खतरे में हैं।

नेपाल

•·जनसंख्याः	28 मिलियन	**•·जाति समूहः**	39
•·प्रमुख धर्मः	हिन्दू	**•·भाषाएंः**	पुर्तगाली
•·गैर इसाईः	98.1%	**•·इसाईः**	1.89%

•·क्षेत्रफलः 147,181 स्कै. कि.मी., चीन (तिब्बत) और भारत के बीच पर्वतों से घिरा एक हिमालयन राज्य। संसार की 10 ऊँची पर्वत चोटियों में से 8 नेपाल में है।

•·विवरणः 1960 से पहले, किसी भी इसाई को शासकीय रूप से नेपाल में रहने की अनुमति नहीं थी। 1990 तक अराधना करने के लिये धार्मिक स्वतन्त्रता थी, परन्तु नये शिष्य बनाने के लिए नहीं। सबसे पहला समूह 1959 में, 29 इसाईयों के साथ बना था। 1985 तक लगभग 50,000 विश्वासी थे। इसका रहस्यः प्रार्थना, यीशु मसीह के लिए यातना सहने के लिए स्वेच्छा, धर्म प्रचार में सक्रिय नेपाली पहल करना चर्च रोपित करना और परमेश्वर की अद्‌भुत कार्य करने की सामर्थ। धार्मिक स्वतन्त्रता बढ़ गई है, पर यह अभी भी केवल आंशिक है। 1990 में प्रजातन्त्र के आगमन से, अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न काफी कम हो गया था। सभी इसाई कैदियों को स्वतन्त्र कर दिया गया था। और 300 से अधिक इसाईयों के विरुद्ध अनिर्णीत मुकद्दमें रद्द कर दिये गये थे। कृपया प्रार्थना करें कि पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए संविधान में आश्वासन हो और अधिकारी वर्गों द्वारा उसका समर्थन हो।

कम्बोडिया

•·जनसंख्याः	11.1 मिलियन	**•·जाति समूहः**	28
•·प्रमुख धर्मः	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएंः**	खेमर
•·गैर इसाईः	98.81%	**•·इसाईः**	1.19%

•·क्षेत्रफलः 181,035 स्कै. कि.मी., मीकौंग नदी पर उपजाऊ, वन-प्रधान इन्डो-चीन के दक्षिण-पश्चिम की ओर एक राज्य।

•·विवरणः कम्बोडिया का आत्मिक अन्धकार प्रार्थना द्वारा दूर होना चाहिए। सर्वव्यापक जीवात्मा के मन्दिरों द्वारा, किसी भी विचार-धारा के प्रतियोगी के लिए बौद्ध-धर्म का सशक्त विरोध तथा नैतिक पतन द्वारा यह अन्धकार प्रकट होता है। देह-व्यापार समृद्ध है, पर समस्त वेश्याओं का एक-तिहाई भाग (अनुमानित 50,000) बच्चे हैं। एच.आई.वी. बहुत तेजी से फैल रहा है, 1999 में 180,000 इससे ग्रसित है और हर वर्ष 3,500 बच्चे एच.आई.वी. के साथ ही पैदा होते हैं। प्रार्थना करें कि सुसमाचार का प्रकाश ऐसे चमके कि समाज तथा व्यक्तियों की संरचना में निश्चित रूप से परिवर्तन आ सके। 1975-79 का भयंकर जाति संहार ने, जिसमें करीब 2 मिलियन लोग मारे गये थे, बहुत गहरे शारीरिक तथा भावनात्मक निशान छोड़े हैं। 30,000 से ज्यादा लोगों ने बारूदी सुरंगों द्वारा अपने हाथ या पांव खो दिये हैं, लगभग सारी ही जनसंख्या को अपने नुकसान तथा कष्टों को सदमे से निकलने के लिए गहन चंगाई की आवश्यकता है।

जापान

•·जनसंख्याः	126 मिलियन	**•·जाति समूहः**	12
•·प्रमुख धर्मः	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएंः**	जापानी
•·गैर इसाईः	98.44%	**•·इसाईः**	1.56%

•·क्षेत्रफलः 377,801 स्कै. कि.मी., 3000 कि.मी. का चार बड़े टापू (होन्शू, होक्कायडो, शिकोकू, क्युशू) और 3000 छोटे टापू।

•·विवरणः नेतृत्व की विफलता के कारण आर्थिक तथा राजनैतिक रूप से जापान संकट में है। बड़े पैमाने पर आर्थिक सुधार, सामाजिक ढांचे में परिवर्तन, जिसने आत्म-हित समूहों का पक्षपात किया (राजनैतिक समूह, याकूजा माफिया गैंग, बैंकर्स इत्यादि), और संसार को एक नई पहचान के लिए साहसिक नेताओं की आवश्यकता होगी जो 21वीं शताब्दि में इन सब पर काबू पा सकें। प्रार्थना करें कि इसाई, यीशु मसीह में दृढ़ रहें और दबाव में आकार अपने विश्वास से समझौता न करें जैसा कि विश्व युद्ध 2 में कई इसाईयों ने किया था। पुरानी बुराईयोंः सम्राट पूजा और सैन्यवाद जैसी पुरानी बुराईयों को पुनः वापिस लाने के लिए चतुराई पूर्ण प्रयास होते रहते हैं। सच्चे, नम्र और परिश्रमी जापानी इतने व्यस्त हैं कि वह सुसमाचार और उचित तथा अनुचित को नहीं समझते हैं, या पाप के अर्थ को नहीं समझते हैं क्योंकि वे सृष्टिकर्ता परमेश्वर को नहीं जानते। अधिकांश व्यक्ति धर्म के महत्व को जानते हैं, 20% व्यक्तियों का निश्चित धर्म है, परन्तु केवल 10% ही व्यक्तिगत परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। विश्वासियों के लिए गवाही तथा समझौता बड़े विषय हैं। प्रतिवर्ष, औसतन 100 नये धर्म शुरु होते हैं, जो तन्त्र-मन्त्र, लौकिक अपर देशीय वासियों पर आधारित हैं। भ्रम की भावना को दूर करने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि वर्तमान आर्थिक आघात, अस्थिरता, तथा भविष्य का भय कई लोगों को आत्म-सन्तोष से निकाल कर बाहर लाये।

मंगोलिया

•·जनसंख्या:	2.6 मिलियन	**•·जाति समूह:**	12
•·प्रमुख धर्म:	शमानिस्र	**•·भाषाएं:**	हल मंगोलियन
•·गैर इसाई:	99.29%	**•·इसाई:**	0.71%

•·क्षेत्रफल: 1,565,00 स्कै. कि.मी., घास के मैदान, उत्तर में वन, तीन बड़ी पर्वतीय श्रृंखला और बड़ा गोवी मरूस्थल।

•·विवरण: शासन के लिये भयभीत करने वाली आर्थिक स्थिति एक की चुनौती है और यह जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है– बैरोजगारी, निर्धनता, 200,000 कुपोषित बच्चे इत्यादि। भ्रष्टाचार-जिसमें कुछ के पास अधिक सम्पत्ति और सभी के हित के लिये अर्थ व्यवस्था को विकसित करने में विफलता ने पुराने शासन का बहिष्कार करने में बढ़ावा दिया है। प्रार्थना करें कि मंगोलिया के नेता बुद्धिमानी से तथा निष्पक्ष रूप से शासन करें। लामावादी बौद्ध धर्म फिर से सजीव हो गया है, मठों की संख्या बढ़ गई है। कई बौद्ध स्थलों तथा मूर्तियों की पुन: स्थापना कर दी गई है। इन सबका आधारभूत कारण पूर्व-वर्ती शमानीवाद, ज्योतिष-शास्त्र और जन्त्र-मन्त्र की शक्तियाँ हैं। अब, सम्भवत: आधी जनसंख्या बौद्ध धर्म या / और शमानवाद का अभ्यास करती है। दूसरे धर्मों तथा मतों का विकास चिंता का विषय है। मोरमोनस, जेहोवा विट्नस और बहाई जैसे समूह बहुत सक्रिय हैं, यह मुख्य नगर में और देश के दूसरे भागों में संगठित हो रहे हैं। प्रार्थना करें कि पूरे देश में प्रभावकारी रूप से पहुँचने के लिए प्रचारक-समूह अधिक कूटनीतिक रूप से फैलाव का कार्य कर पायें।

दक्षिण कोरिया

•·जनसंख्या:	46 मिलियन	**•·जाति समूह:**	2
•·प्रमुख धर्म:	इसाई	**•·भाषाएं:**	कोरियन
•·गैर इसाई:	68.33%	**•·इसाई:**	31.67%

•·क्षेत्रफल: 99,067 स्कै. कि.मी. कोरियन महाद्वीप का आधा दक्षिणी भाग।

•·विवरण: 1997 में एशियन दमन, राजनीति, उद्योग, अर्थ-व्यवस्था तथा चर्चों में अपने प्रतिनिधित्व के साथ, एक बहुत भयंकर आघात था। भौतिकवाद तथा गर्व को छेद दिया गया था। और यद्यपि कुछ निवृत्ति हुई थी, पर आवश्यक नवीनीकरण तथा राज-नैतिक रोकत तथा संतुलन में पर्याप्त बढ़ोतरी नहीं हुई है। प्रार्थना करें कि देश के राजनैतिक, औद्योगिक तथा धार्मिक नेता इस आवश्यकता का सामना कर सकें, और साहस के साथ आवश्यक परिवर्तनों से जूझ सकें। संकटों के समय, कई चर्चों ने प्रायश्चित तथा निष्ठा में स्वयं को परमेश्वर के सामने दीन बना लिया है। उत्तरी कोरिया पर आर्थिक तथा राजनैतिक आपदा का मंडराता हुआ संकट, दक्षिण पर बहुत अधिक प्रभाव छोड़ेगा। सुबह की आरम्भिक प्रार्थना सभाओ; परमेश्वर की खोज के लिए प्रार्थनाएँ, चर्च में आधारित बाइबल अध्ययन, प्रचार की योजनाएं, रविवार के मध्य दिवसीय भोजन तथा घरों में सभाओं के द्वारा, कोरियन चर्च सशक्त हो गया है।

थायलैण्ड

•·जनसंख्याः	61.3 मिलियन	**•·जाति समूहः**	52
•·प्रमुख धर्मः	बौद्ध धर्म	**•·भाषाएंः**	थाई
•·गैर इसाईः	98.38%	**•·इसाईः**	1.62%

•·क्षेत्रफलः 513,115 स्कै. कि.मी. एक उपजाऊ तथा भूमिगत जल वाला प्रदेश जो म्यानामर, लाओस तथा कम्बोडिया और मलेशिया के सीमावर्ती क्षेत्र में है।

•·विवरणः थायलैण्ड का अर्थ है "स्वतन्त्र (मुक्त) देश" क्योंकि जब आस-पास के देशों में पश्चिमी शक्तियों द्वारा उपनिवेश हो रहा था, तब इसने अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रखा। ऐसा विश्वास देवाधिराज, ने इस देश की रक्षा की थी, और इस आत्मिक मानव की सोने की आकृति बनाई गई थी। तब से इसकी पूजा करी जाती है। यह देश संस्कृति के एक जटिल जाल के बन्धन में है– आत्माओं को शान्त करना, तन्त्र-मन्त्र और बौद्ध धर्म और एक सामाजिक सम्बद्धता जिससे कुछ ही लोगों ने बाहर आने का साहस किया। कई थाईवासियों के लिए उनकी राष्ट्रीयता तथा धर्म ऐसे जुड़े हुये हैं जो अलग नहीं किये जा सकते। आत्मिक अविष्कार के लिए प्रार्थना करें ताकि प्रभु यीशु मसीह में यह देश वास्तव में स्वतन्त्र हो सके। थाई समाज के भीतर क्या भ्रष्टाचार पूरी तरह से, केवल परमेश्वर की ओर लौट कर आने के द्वारा ही, साफ हो सकता है तथा जड़ से काट कर फेंका जा सकता है। भ्रष्ट सैन्य, शासकीय तथा पुलिस के नेताओं ने बड़े देह-व्यापार को संरक्षण दिया है, नशीली दवाओं का जाल, अपराध संघ और देश की पर्यावरणीय दुर्दशा की रक्षा की है। देह व्यापार का व्यवसाय, देश के जी.डी.पी. का 14% भाग का योगदान देता है। अनियमित अर्थ-व्यवस्था, शासकीय अर्थव्यवस्था से बड़ी है। प्रार्थना करें कि ईमानदार, तथा न्याय प्रिय नेता सामने आयें जो उन कानूनी तथा सामाजिक रूपरेखाओं को बनायेंगे जो भ्रष्टाचार को सीमित कर सकेंगे।